मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

देश की स्थिति

“आज हमने देश की क्या हालत बना रखी है। हम अपने हाथों से किस प्रकार इसका हुलिया बिगाड़ रहे हैं। जैसे यह देश किसी दुश्मन के हाथ लग गया है और वह अच्छी तरह से इससे बदला चुकाना चाहता है और अपने दिल की भड़ास निकाल रहा है। बिल्कुल ऐसा लग रहा है कि हम इसको उजाड़ कर रख देना चाहते हैं और इसको किसी लायक़ नहीं छोड़ना चाहते। इस देश के साथ हमारा मामला एक दुश्मन का सा मामला है। रेलों पर सफ़र करके आप देख लीजिए। बसों पर सफ़र करके आप देख लीजिए। आप किसी विभाग में जाकर देख लीजिए। इन्साफ़ के साथ क्या हो रहा है। हम स्वयं अपने देश को अपने हाथ से तबाह कर रहे हैं। रेल का हाल यह है कि पंखे, नलों की टोटियां, खिड़कियां, सीटों की रैक्सीन चुरायी जाती है। गलियों के मेनहोल के ढक्कन चुराये जाते हैं इसकी भी परवाह नहीं होती कि किसी छोटे बच्चे की इसमें जान चली जाएगी। एक ऐसी गिरावट व पतन जिसके लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं।”

(हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

AUG 16

₹ 10/-

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

दीन के इल्म का मक़सद

इस्लाम धर्म में इल्म (ज्ञान) का विशेष स्थान है। क्योंकि इल्म ही मानवता को जिहालत की अंधेरी गुफ़ाओं से निकालकर रोशनी प्रदान करता है। सभ्यता व सस्कृति से परिचित कराता है। नये साधनों तक पहुंचने में मार्गदर्शन करता है। सबसे बढ़कर यह कि अल्लाह की पहचान व अल्लाह की याद को पाने का भी संभावित साधन होता है। यही वहज है कि क़ुरआन मजीद में सबसे पहले इल्म को हासिल करने का हुक्म दिया गया, कहा गयाः "पढ़िए अपने उस परवरदिगार के नाम से जिसने पैदा किया।" (सूरह अलक़ः 1)

क़ुरआन मजीद की इस आयत में एक ओर शर्त भी लगा दी गयी है कि इल्म (ज्ञान) प्राप्ति अपने रब के नाम से जुड़ी होनी आवश्यक है, तभी वह इल्म मानवता के उन्नति प्रदान करने वाला और आख़िरत (परलोक) के जीवन में सफलता दिलाने वाला होगा। इसके द्वारा संसार में अमन व शांति फैलेगी। वह ज्ञान मानवता के लिये जान का वबाल साबित नहीं होगा बल्कि मानवता के मूल्यों को स्थापित करने वाला लाभकारी ज्ञान होगा। और फ़ायदा पहुंचाने वाली चीज़ के बारे में अल्लाह का क़ानून यह है कि दुनिया उसकी ओर आकर्षित होती है और वह स्थायी होता है।

फ़ायदे के बाक़ी रहने का यही वह क़ानून है जिसकी वजह से दीन के इल्म (धार्मिक ज्ञान) की शमा (प्रकाश) हर दौर में जलती रही। जबकि हर ज़माने में अपने–अपने एतबार से ज़ालिम व अत्याचारी ताक़तों ने ऐसी घिनावनी व ज़ोरदार साज़िशें रचीं जिनकी योजना यह थी कि (अल्लाह न करे) दीन के इल्म को ख़त्म कर दिया जाए और मानवता को मौत के गढ़े में धकेल दिया जाए। क्योंकि दीन का इल्म नबियों और उनके वारिसों यानि उलमा–ए–किराम (धर्म का ज्ञान रखने वाले) से जुड़ा है। इसलिये हर दौर में ख़ुदा की क़सम ये मर्द अत्याचारी ताक़तों के सामने डटे रहे। अल्लाह तआला की मदद और उसकी तौफ़ीक़ से बिना किसी दुनियावी लालच के दीन के इल्म को तश्दुद (हिंसा) गुलू (बढ़ोत्तरी / अधिकता) और बदलाव से पाक करते रहे। दीनी व दुनिया के एतबार से इनसानियत को नजात की राह की ओर मार्गदर्शन करते रहे।

इसमें कोई शक नहीं कि इल्म–ए–दीन (धार्मिक ज्ञान) का महत्व व मूल्य किसी कोहिनूर से कम नहीं बल्कि उससे भी अधिक है। इसलिये दीन के इल्म को पाने के लिये इस्लामी शरीअत ने ऐसे नियम बनाए हैं जिनके आधार पर इनसान दीन के इल्म को अपने भौतिक इच्छाओं व उद्देश्यों की ख़ातिर बिल्कुल भी हासिल न करे बल्कि इसके द्वारा उसकी नज़र अल्लाह की रज़ा (स्वीकृति) व अल्लाह की मारिफ़त (पहचान) पाना हो। इसीलिए स्पष्ट रूप से यह बात कह दी गयी कि यदि किसी व्यक्ति ने दीन के ज्ञान को अल्लाह की स्वीकृति को पाने के अतिरिक्त दुनिया के किसी और उद्देश्य के लिये प्राप्त किया तो वह जन्नत की ख़ुशबू से भी वंचित रहेगा। जो व्यक्ति जन्नत की ख़ुशबू सूंघने से भी वंचित रहेगा तो जन्नत पाने की संभावना भी मुश्किल है। इस हदीस के परिदृष्य में यदि आज हम दीनी मदरसों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों का जाएज़ा लें तो एक बड़ी संख्या ऐसी नज़र आती है जिनका मक़सद जानबूझ कर या अनजाने में इसके द्वारा दुनिया के लाभ को प्राप्त करना है। जबकि एक लम्बे समय तक उन्हें क़ुरआन व हदीस के पन्ने पलटने से उन्हें भौतिकता का शिकार होने के नुक़सान, दुनिया से मुहब्बत की हानियों का सबक़ सिखाया जाता है। दुनिया के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर दीन के इल्म से जुड़ने पर जो वईदें आयी हैं वे भी बतायी जाती हैं। मगर इसके बावजूद दुनिया की मुहब्बत उनके घरों मे घुस जाती है। सब कुछ जानने के बावजूद उनकी अक्ल पर भौतिकता के मोटे पर्दे पड़ जाते हैं जबकि दीन के इल्म का नफ़ा, उस पर मिलने वाला सवाब उन्हीं नियमो से जुड़ा है जो नियम नबियों की जीवन में अमलीरूप से मौजूद हैं यानि सांसारिक लाभ की प्राप्ति से दूर रह कर आख़िरत के सवाब का यक़ीन रखना।

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:०८ अगस्त २०१६ ई० वर्ष:८

संरक्षकः हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मौ० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मौ० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

कि अकबर नाम लेता है खुदा का इस ज़माने में.........२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इतिहास की वास्तविकताओं से अनदेखी क्यों.......३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

इल्म की हक़ीक़त..५
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

समाज की बिगड़ती हुई स्थिति.........................६
शमसुल हक़ नदवी

रसूलुल्लाह स०अ० की जीवनी.......................८
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

नबी करीम स०अ० की पत्नियाँ ११

जमाअत व इमामत – एहकाम व फ़ज़ाएल......१२
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इस्लाम और कट्टरता.......................................१५
अज़ीज़ुल हक़ उमरी

उन्नति के क्षेत्र में मुस्लिम देशों की रफ़्तार..........१६
डॉक्टर ज़ुबैर ज़फ़र ख़ाना

तुर्की में असफल सैन्य विद्रोह की पृष्ठभूमि........१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादक: बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्जी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू0

सम्पादकीय

कि अकबर नाम लेता है ख़ुदा का इस ज़माने में

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इस समय पूरी इस्लामी दुनिया में एक भूचाल सा आया हुआ है। यदि कहीं भी इस्लाम का प्रदर्शन होने लगता है तो यूरोप व अमरीका को एक करन्ट सा लग जाता है। शायद इस ज़माने में उसके सामने इस्लाम की वह छः सौ साल का सुनहरा इतिहास है जब सारी दुनिया इस्लाम की छत्रछाया में थी। ईसाई दुनिया को यह डर है कि कहीं दोबारा यह कमान मुसलमानों के हाथों में न चली जाए। इस भ्रमित संकट से निपटने के लिये यूरोप व अमरीका को ज़रा भी दर्द नहीं होता कि हज़ारों इनसानो की जान ले ली जाए, राष्ट्रों के टुकड़े कर दिये जाएं, एटम बम बरसाए जाएं, मानवाधिकारों का हनन किया जाए, उसके सामने केवल एक उद्देश्य है और वह है सत्ता, सारी दुनिया पर वर्चस्व स्थापित करना। लोकतन्त्र व आज़ादी का ढिंढोरा पीटने वाले सबसे बढ़कर उसका ख़ून करने वाले हैं।

तुर्की की वर्तमान स्थिति भी इसी की स्थिति का वर्णन कर रही है। यह यूरोप के लिये सबसे बड़ा कांटा है। कमाल अता तुर्क के द्वारा तुर्की को जिस रास्ते पर डाला गया था वर्तमान प्रशासन ने दोबारा पुराने इस्लामिक तुर्की को बहाल करने का प्रयास शुरू कर दिया है। वह उन इस्लाम की दुश्मन ताक़तों के लिये नागवार साबित हो रहा है। किसी भी इस्लामिक राष्ट्र के लिये इस समय इस्लाम का नाम लेना भी जुर्म है और ऐसा जुर्म की उसकी चूलें हिला दी जाएं और उसके लिये हर तरह के हथकण्डे अपनाए जाएं। अकबर इलाहाबादी ने क्या ख़ूब कहा था किः

रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा–जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है ख़ुदा का इस ज़माने में।।

इस समय लोकतन्त्र का नाम अमरीका व आज़ादी का नाम यूरोप है। जो वे कहें वही लोकतन्त्र है, वही आज़ादी है, चाहे वे कितनी ही पाबन्दी व ग़ुलामी की शक्लें हों। चाहे इसमें लोकतन्त्र का कैसा ही गला दबाया जा रहा हो।

तुर्की में सैन्य विद्रोह कराया गया केवल अल्लाह का करम है कि वह असफल रहा। निसंदेह इसमें तैयब उर्दगान की सूझ–बूझ का भी बड़ा हिस्सा है। लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह है कि नासूर मौजूद है, जो अन्दर ही अन्दर पकाया जा रहा है। मुक़ाबला बड़ी ताक़तों से है, लाठी का गोली से। साफ़ है कि इस स्थिति में अधिक रणनीति बनाने की भी आवश्यकता है। बहुत फूंक–फूंक कर क़दम रखने की आवश्यकता है। ज़रा सी लापरवाही पीछे ढ़केल सकती है। और समस्या केवल तुर्की की ही नहीं है हर जगह मुसलमानों को जिस स्थिति का सामना और अपनों की परिणाम से अनदेखी ने मुसलमानों को जिस धारे पर डाल दिया है वह बहुत ख़तरनाक स्थिति है। इस समय बहुत ही अन्दर–अन्दर और बहुत ही ठोस और सकारात्मक मेहनत की आवश्यकता है। जिन कमियों के नतीजे में हम इस स्थिति का सामना कर रहे हैं उन कमियों को दूर करने की ज़रूरत है। और भावनाओं में न बहकर सोच–विचार करने की आवश्यकता है। इतिहास के बीते हुए पन्नों से सीख लेने की आवश्यकता है। यूरोप कहां से कहां पहुंचा। इसके कारण क्या थे और उसने कौन सा तरीक़ा अपनाया और मुसलमानों के आपसी झगड़ों और बेजा जज़्बातों ने उन्हें कहां से कहां पहुंचा दिया।

अफ़सोस की बात यह है कि आज पतन के इस दौर में भी वे बीमारियां हम मुसलमानों में पूरी तरह से मौजूद हैं बल्कि दूसरों की तरफ़ से उनको बढ़ावा दिया जा रहा है। छोटी–छोटी सी बातों पर झगड़ा और एक दूसरे को कमज़ोर करने के लिये कोशिशें ही नहीं साज़िश करना एक आम बात बन गयी है यहां तक कि उसके लिये दूसरों से मिल जाना और अपनों को नीचा दिखानाः

क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं?

बड़े सब्र की आवश्यकता है। सोच–विचार करने की आवश्यकता है और रणनीतियां बनाने की आवश्यकता है। हमारे पास सबसे बढ़कर रसूलुल्लाह (स0अ0) की जीवनी है उनका नमूना है। उसको सामने रखकर ही हम आगे बढ़ सकते हैं और यही इस्लामी एकता का एकमात्र रास्ता है।

इतिहास की वास्तविकताओं से अनदेखी क्यों?

मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी

दुनिया का इतिहास यह बताता है कि यदि परवरदिगार–ए–आलम (सृष्टि के सृष्टा) का डर न हो और आख़िरत (परलोक) में अपने कर्मों का बदला मिलने का विचार न हो मनुष्य अपनी इच्छाओं का ग़ुलाम और जीवन के हर मामले को केवल अपने सांसारिक लाभ के परिदृष्य में देखने वाला बन जाता है और यह बात कई बार इस हद तक बढ़ जाती है कि उसकी ख़ातिर दूसरे के अधिकारों का हनन (हक़ मारने) बल्कि उस पर अत्याचार करने व उसे प्रताड़ित करने से भी बाज़ नहीं आता। यह बात क़ौमों (समुदायों) के जीवन में भी पायी जाती है और लोगों के जीवन में भी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

मिस्र के फ़िरऔनो (शासकों) ने अपने मर जाने वाले बादशाहों के पहाड़ जैसे पिरामिड बनाने के लिये अपनी जनता के साथ किस प्रकार ज़ालिमाना तरीक़े से व्यवहार किया और उसके आधार पर अत्याचार व ज़्यादती के द्वारा अपनी महानता के चिन्ह स्थापित करने के उदाहरण प्रस्तुत किये। फिर अपने दुनिया के फ़ायदों के लिये अपने अधीन अल्पसंख्यक क़ौम बनीइस्राईल की शरीफ़ज़ादियों (स्त्रियों) को अपनी कनीज़ (सेविका) बनाया ताकि उनसे सेवा करांए और उनका लाभ उठाएं और उनके बच्चों को साधारणतयः क़त्ल करने का तरीक़ा अपनाया कि वे बड़े होकर उनके मुक़ाबले को न आ सकें। कुरआन मजीद इसका वर्णन इस प्रकार करता है:

"उनके लड़कों को ज़िबह करता था और लड़कियों का ज़िन्दा रखता था।"

दूसरी ओर आद व समूद और अमालक़ा के समुदाय अपनी ताक़त व ज़बरदस्ती का प्रदर्शन करते फिरते थे जिसको कुरआन मजीद में यूं बयान किया गया है:

"कि हर जगह पर तुम कोई शानदार यादगार बनाते हो और जिस किसी पर तुम ताक़त का इस्तेमाल करते हो तो बड़े जब्बार और क़ह्हार (अत्याचारी व अन्यायी) बनकर ताक़त का इस्तेमाल करते हो।"

कुरआन मजीद ने इन क़ौमों का वर्णन शायद इसलिये किया कि आगे आने वाले लोग समझें कि आगे भी ख़ुदा और आख़िरत को भूलने वाली क़ौमों का यही तरीक़ा बन सकता है। अतः लोग इसे समझे और अपने को झूठ व मनमानी से हटारक अल्लाह तआला की तय की हुई सीधी राह पर चलें, वरना वे अल्लाह के अज़ाब (प्रकोप) का शिकार होंगे।

कुरआन मजीद में समुदायों के साथ–साथ लोगो में भी इस प्रकार के रवैयों की मिसालें भी बयान की गयी हैं जो अधिकतर बनीइस्राईल के लोगों की हैं। जब उनका शुरू का अच्छा ज़माना गुज़र जाने के बाद उनके बहुत से लोग मनमानी करने लगे और दुनियादारी में पड़ने लगे और बेईमान और स्वार्थी और अन्यायी हुए जो कि दुनिया से उनकी मनमाने प्रेम व लगाव के कारण से और मन की इच्छापूर्ति करने के कारण हुआ। कुरआन मजीद में यह बातें केवल इतिहास बताने के लिये नहीं दी गयीं बल्कि यह इसलिये बयान की गयीं कि आने वाली क़ौमें और उनके लोग सबक़ लें और अपने जीवन को सही दिशा प्रदान करें और वे सही दिशा पर अल्लाह तआला की नाराज़गी के डर और आख़िरत में बदले के विचार से जुड़ा हुआ है।

कुरआन मजीद में साफ़–साफ़ बताया गया है कि जब मानवीय समाज में बुराइयां बहुत अधिक और भयानक रूप धारण कर लेती हैं तो पूरा समाज अल्लाह के प्रकोप का शिकार होता है और कई बार इसका असर पूरे समाज की सम्पूर्ण तबाही की शक्ल में प्रकट होता

है। लेकिन अफ़सोस की बात है कि मनुष्य साधारणतयः अपनी ताक़त व दौलत के नशे में उन वास्तविकताओं की अनदेखी कर देता है जिसका बुरा परिणाम उसको बाद में झेलना पड़ता है। कुरआन मजीद ने बहुत सी घटनाएं इसी क्रम में बयान की हैं और उनका उद्देश्य एक ख़ुदा पर ईमान रखने वालों को ध्यान दिलाना है। उनमें से बहुत सी घटनाए वर्चस्व प्राप्त नस्ल के अधीनस्थ नस्लों को दबाने और अनदेखा करने की हैं। बहुत सी घटनाएं अधिकार प्राप्त लोगों की ओर से अपनी प्रजा के साथ अत्याचार व अन्याय और शोषण करने की स्थिति में सामने आती हैं और बहुत सी घटनाएं महान लोगों की ओर से अपनी बेजा शान व महानता का प्रदर्शन करने और दूसरों को उसकी ख़ातिर रौंदने की होती हैं। बहुत सी घटनाएं समाज में भ्रष्टाचार के फैल जाने और अपनी बेहूदगी पर जुर्रत के साथ कार्यरत होने के हैं और बहुत सी घटनाएं अनैतिकता व व्यापार में धोखाधड़ी की हैं और घटतौली करने के परिणाम में होने वाली हैं। ऐसी क़ौमो के बारे में जिनमें उपरोक्त घटनाएं आम हों और उनको समझाने वालों ने बहुत–बहुत समझाया लेकिन वे स्वयं में बदलाव नहीं लाए। अन्ततः कोई ऐसी मुसीबत उन पर डाल दी गयी कि पूरी की पूरी नस्ल तबाह हो गयी। कहीं भूकम्प से, कहीं तूफ़ान से, कहीं किसी और आसमानी और ज़मीनी आफ़त से तबाही आयी और ख़ुदा के हुक्मों को न मानने और घमन्ड व अनुचित रूप से ज़बरदस्ती और ज़्यादती (अन्याय व अत्याचार) करने पर सज़ा दी गयी।

आज की दुनिया में ऐसी सारी ख़राबियां मौजूद हैं और बढ़ती जा रही हैं। उनको दूर करने और उनसे बचने की चिन्ता करना आवश्यक है। मानव समाज भ्रष्ट होता जा रहा है। शान व शौकत दिखाने के लिये शानदार इमारतें, आर्थिक लाभ के लिये ग़रीबों का शोषण, वर्चस्व के लिये हर प्रकार का जोड़–तोड़, ताक़त व महानता के झूठे प्रदर्शन, ताक़त के बल पर दूसरों को दबाने और उनकी कमज़ोरी से फ़ायदा उठाने के तरीक़े, कारोबार व लेन–देन में चालाकी और धोखाधड़ी, धर्म या जाति के आधार पर जोर–जबरदस्ती व अत्याचार व अधिकार हनन, वे कौन कौन सी ऐसी बातें हैं जो उस समय के मानव समाज में नहीं फैली थीं, आम होती जा रही हैं। लेकिन इस युग के लोकतन्त्र व समानता के दावों व नारों के व मनुष्य व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की घोषणा के बावजूद अधिकतर जगहों पर जबर व शोषण और अधिकारों का हनन और कमज़ोरों को कमज़ोर बनाए रखने का क्रम जारी है और बहुत सी जगहों पर तो अत्याचार के पुराने इतिहासों के उदाहरणों को दोहरा दिया गया है जिनकी गवाही साइबेरिया में निकाले गये लोगों के हालात और दक्षिणी यूरोप की अल्पसंख्यक आबादी के साथ अत्याचार करने और फ़िलिस्तीनियों के अधिकारो का हनन और प्रताड़ित किये जाने की घटनाओं से मिलती है। दुनिया के बहुत से सभ्य और स्वतन्त्रता व लोकतन्त्र के दावेदार देशों में गोरे और कालों के बीच अत्याचार की हद तक पहुंची असमानता के उदाहरण अभी दिमाग़ों में ताज़ा हैं। यह तो सामूहिक क्षेत्र के हालात हैं। उसके साथ–साथ व्यक्तिगत जीवन में स्वार्थ, अन्याय और दुर्व्यवहार के हालात दुनिया के अधिकतर क्षेत्रों में खुले तौर से देखे जा सकते हैं और सबसे अधिक यह कि ख़ुदा के डर की कमी और अपने कर्मों के बदले से बेपरवाही, स्थिति को और अधिक बिगाड़ रही है। ऐसी स्थिति में अल्लाह का प्रकोप किसी समय आ जाना कोई आचश्चर्य की बात नहीं। इस बारे में मुसलमानों को भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि उनमें भी इनमें से बहुत सी ख़राबियां खुले तौर पर देखी जा सकती हैं। यह सब बहुत ख़तरे की बात है। अल्लाह तआला सब देखता है और इन बातों को जो अत्याचार व ज़बरदस्ती और अल्लाह के हुक्मों से हटने और आख़िरत के बदले से बेपरवाही की स्थिति में प्रकट होती जाती हैं, बहुत नापसंद करता है। लेकिन उसकी ओर से समय देने व सुधार कर लेने का अवसर देने का मामला है ताकि गुनाहगार लोग समय रहते हुए फ़ायदा उठाकर स्वयं को बदलें, लेकिन यदि समय रहते अवसर का लाभ न प्राप्त किया और समझाने से न माने और अपना सुधार न किया तो उनके लिये फिर पकड़ व अज़ाब है।

इल्म की हक़ीक़त

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

इल्म से जुड़े होना आम बात नहीं है। कुरआन मजीद ने सबसे पहले इसी के बारे में आदेश दिया था कि इल्म (ज्ञान) से जुड़ जाओ, कुरआन मजीद में कहा गया:

"पढ़िए अपने उस परवरदिगार के नाम से जिसने पैदा किया।" (सूरह अलक़: 1) इसी क्रम में रसूलुल्लाह स0अ0 का भी यह आदेश है:

"इल्म (ज्ञान) का हालिस करना हर मुसलमान का कर्तव्य है।" मानो यह बात तय कर दी गयी कि हम सब इल्म से जुड़े हुए हैं। लेकिन जो चीज़ ज़्यादा सामने होती है और आदमी जिस चीज़ को बराबर देखता है या सुनता है या पढ़ता है, तो उस चीज़ की हक़ीक़त पर निगाह नहीं जाती और आदमी उस पर ध्यान नहीं देता, जैसे इल्म शब्द है। इल्म अर्थात ज्ञान किसको कहते हैं?वह भी अधिकतर हमारी निगाहों से ओझल हो जाता है। यदि हम विचार करें तो इल्म (ज्ञान) से तीन चीज़े संबंधित हैं। यदि यह तीन चीज़ें न हों तो वह इल्म (ज्ञान) कहलाने का अधिकारी ही नहीं है। इल्म (ज्ञान) का अर्थ है "दानिस्तन" यानि जानना, तो हम यह समझ लेते हैं कि इल्म (ज्ञान) नाम है केवल जानने का, लेकिन इल्म में भी तीन शब्द हैं। "ऐन" "लाम" "मी" "इल्म" स्वयं अपने तीन अक्षरों से यह बता रहा है कि तीन चीज़ों का सयुंक्त रूप जो चीज़ होगी। अकेले ऐन, लाम, या मीम का नाम इल्म (ज्ञान) नहीं बल्कि ऐन, लाम, मीम को जोड़ने से इल्म (ज्ञान) बनता है। अतः जिस प्रकार इल्म (ज्ञान) के लिये तीन अक्षरों का होना आवश्यक है जिनके बिना इल्म (ज्ञान) इल्म (ज्ञान) नहीं हो सकता। इसी प्रकार इल्म (ज्ञान) के तत्वों का होना बहुत आवश्यक है। वे तत्व यह हैं कि इनसान इल्म (ज्ञान) के साथ अमल (कर्म) और मारिफ़त (अल्लाह की पहचान) रखता हो। मानो इल्म (ज्ञान), अमल (कर्म) व मारिफ़त (अल्लाह की पहचान) यह एक दूसरे के पूरक हैं। जब कोई इनसान इन तीनों विशेषताओं को रखता है तो उसे आलिम (ज्ञानी) कहा जाता है और यदि उसमें से एक भी कम हो जाए, तो यद्यपि वह व्यक्ति आलिम (ज्ञानी) हो, लेकिन वह पूर्णतयः आलिम (ज्ञानी) नहीं होगा। यदि किसी व्यक्ति के पास इल्म (ज्ञान) नहीं होगा और वह अमल (कर्म) व मारिफ़त (अल्लाह की पहचान) का दावेदार है तो वह सरकटा होने की तरह है इसी तरह अमल (कर्म) व मारिफ़त (अल्लाह की पहचान) नहीं है तो वह एक बिना रूह के जिस्म (आत्मा रहित शरीर) की तरह है। यदि किसी को तीनों चीज़ें मिल जाएं तो वह उस इल्म (ज्ञान) से फ़ायदा उठाने वाला बन सकेगा। क्योंकि यदि किसी व्यक्ति को जनरेटर से फ़ायदा उठाना है तो पहले उसके बारे में जानना आवश्यक है। फिर उनके तारों का कनेक्शन करना ज़रूरी है और उसी के साथ उन सब बातों का तरीक़ा मालूम होना ज़रूरी है। अतः जो आलिम (ज्ञानी) इल्म (ज्ञान) जानता है लेकिन अमल (कर्म) नहीं करता और अमल (कर्म) पर मारिफ़त (अल्लाह की पहचान) का आधार नहीं होता तो इसमें कोई शक नहीं कि ऐसा इनसान आलिम (ज्ञानी) होने के बावजूद आमिल (ज्ञानी) नहीं गिना जाएगा। एक आलिम (ज्ञानी) की शान यह है कि वह इल्म (ज्ञान) पर अमल (कर्म) करे क्योंकि अमल (कर्म) करने वाले आमिल (ज्ञानी) के दिल पर अल्लाह तआला की तरफ़ से इल्म–ए–नूर के सोते (प्रकाश के स्त्रोत) जारी होते हैं। उसको ज़िन्दगी के किसी भी मैदान में कोई परेशानी नहीं होती। लेकिन क्योंकि आजकल इन बातों की कमी है इसीलिये मदरसों की संख्या बढ़ रही है,

समाज की बिगड़ती हुई स्थिति

मौलाना शमसुल हक़ नदवी

यह बहुत साधारण बात है। हर आम व ख़ास इसको जानता है कि जब बुख़ार या किसी और बीमारी के कारण मुंह का मज़ा (स्वाद) बिगड़ जाता है तब अच्छे से अच्छा खाना भी बुरा लगता है। खाना तो दूर की बात अक्सर उसकी बात करने या गंध से भी उल्टी आने लगती है। यदि किसी क्षेत्र में मलेरिया की बीमारी फैल जाए और उसके मरीज़ों की संख्या बढ़ जाए और सब एक ज़बान में कहना शुरू कर दें कि हमारे शहर से ऐसे सभी खाद्य पदार्थों को फेंक दिया जाए जिनको पुराने विचारों के लोग पसंद करते हैं और उनको अच्छा व स्वादिष्ट बताते हैं तो क्या शहर के वैध व डॉक्टर और सेहतमन्द लोग उन मरीज़ों की बात मान लेंगे?क्या उस शहर के स्वास्थ्य विभाग वाले उन मरीज़ो की बात को सुनेंगे? और यदि सुने व उन पर कार्यरत हों तो क्या यह न कहा जाएगा कि उनकी अक्लों पर पत्थर पड़ गया है?बहुसंख्यकों व माहौल के बदलाव ने उनकी ऐसी नज़रबन्दी कर दी है कि वे अपना ज्ञान व अनुभव सबकुछ भूल गये हैं। हमारी आज की दुनिया का कुछ ऐसा ही हाल हो रहा है। नयी सभ्यता के अधीनस्थों ने दिमाग़ों को इतना बिगाड़ दिया है कि हर सीधी चीज़ टेढ़ी और टेढ़ी चीज़ सीधी नज़र आ रही है जिसके परिणाम में हमारे समाज व सोसाइटी की कोई चूल सीधी नहीं रह गयी है। हमारे प्रचार–प्रसार के साधनों व मीडिया ने मासूम बच्चों से लेकर नवयुवकों व बूढ़ों तक के दिमाग़ों का सांचा ऐसा बदल दिया है कि मुहब्बत व शराफ़त, हमदर्दी व मानवता की सेवा का भाव की जगह तंग मिज़ाजी, नफ़रत व दुश्मनी, मारपीट व लूटपाट व अश्लीलता ने ले ली है जिसका परिणाम यह है कि मनुष्य सांप, बिच्छू, भेड़ियों व दरिन्दों को मात दे रहा है। मनुष्य को इस प्रकार मारा, जलाया व मौत के घाट उतारा जा रहा है, जिस प्रकार से ख़तरनाक जानवरों को मारने की स्कीम चलायी जाती है। दुनिया के विभिन्न देशों व क्षेत्रों में रंग व जाति के आधार पर होने वाले ख़ून ख़राबे के अतिरिक्त मनुष्य कितनी बेदर्दी के साथ छोटी–छोटी बातों पर मनुष्य को मार रहा है। कौन सा दिन गुज़रता है जिसमें नदी, नालों या खेतों में लाशों के मिलने की ख़बर न आती हो और यह वे हैं जो प्रेस में आ गयीं, ऐसी कितनी घटनाएं होंगी जो क्षेत्रीय लोगों के अतिरिक्त किसी और को न मालूम हों। बात यहां तक पहुंच गयी है कि मालिक यदि अपने परिवार के लोगो के साथ बैठकर टेलीविज़न देख रहा है और नौकर को उस समय किसी काम के लिये भेज देता है और उसको टीवी देखने का अवसर नहीं देता तो टीवी पर दिखाये जाने वाले क़त्ल व हत्या के दृश्यों ने उसे ऐसा आतंकी बना दिया है कि वह बेझिझक अपने मालिक को और उसके परिवार को अपनी गोलियों का निशाना बना देता है।

हमारी यह मीडिया फ़ायदे से अधिक नुक़सान पहुंचा रही है। मानवता का पाठ पढ़ाने के बजाए दरिन्दगी व अमानवीयता का प्रचार कर रही है। लेकिन किसी की हिम्मत कि उसकी आलोचना करे। उसकी हानियों के बारे में बताए। कौन है जो कहे कि भाइयों! तुम्हारे मुंह का मज़ा बदल गया है। तुम्हारी नज़रबन्दी कर दी गयी है। तुम अपना इलाज करो। स्वास्थ्य विभाग के लोगो की सलाह मानो। डॉक्टरों को जुनूनी व पागल मत समझो वरना तुम सब तबाह व बर्बाद हो जाओगे।

यह काम केवल नबी अलैहिस्सलाम (ईश्वर के संदेष्टा) का होता है कि वह पूरी मानवता का आत्मिक वैध व उपचारक होता है। जब से दुनिया बसी है उस

समय से बराबर यह होता आया है कि जब भी मनुष्य की प्रकृति में बिगाड़ पैदा हुआ है तो नबियों ने आकर उनका उपचार किया है और सबसे अन्त में अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लाहुअलैहि वसल्लम पधारे और बिगड़ी हुई मानवता के दर्द को दूर किया और मानवता को तबाही से बचाया। रसूलुल्लाह स0अ0 के इस दुनिया से जाने के बाद उनकी शिक्षाओं की पैरवी करने वाले पैरोकार हैं और उनकी दावत देते कि मानवता उसी समय सफलता को पा सकती है जब इन शिक्षाओं व नियमों पर कार्यरत हो। किन्तु अफ़सोस यह है कि मनुष्य की प्रकृति इतनी बिगड़ चुकी है कि आग में जलने वाले इस युग के मनुष्य को भलाई की ओर बुलाने वाले उन भले लोगो पर ही ग़ुस्सा आ रहा है और उनको रूढ़िवादी होने और धार्मिक रूप से कट्टर होने का ताना देकर उनकी आवाज़ को प्रभावहीन कर रहा है।

दुनिया का कौन पढ़ा–लिखा इनसान है जिसके सामने सुबह उठते ही हमारे आज के समाज व सोसाइटी की एक झलक न नज़र आती हो। कितने ऐसे मनुष्य हैं जो इस झलक को देखकर तड़प उठते हों, बेचैन हो जाते हों, मानवता के इस ख़ूनी पहलू को देखकर यदि कोई तड़पता और बेचैन होता है तो वही लोग जिनको धार्मिक जुनूनी होने व रूढ़िवादी होने का ताना दिया जाता है। दुनिया में और हमारे देश में जगह–जगह जीवन बीमा कराने की कम्पनी स्थापित हो रही है किन्तु कितने हैं जो जीवन को सुरक्षित करते हैं?हाँ, मर जाने पर बीमे की धनराशि दे देते हैं। किन्तु जिन शिक्षाओं के द्वारा वास्तविक जीवन का बीमा होता है उनको मानने के लिये कोई तैयार नहीं है। बल्कि उनका मज़ाक़ उड़ाया जाता है। उसको कमतर समझा जाता है। हमारा पढ़ा–लिखा वर्ग कुछ तो सोचे कि क्या हो रहा है?इनसान कहां जा रहा है?जो आज सुरक्षित है क्या वह कल भी सुरक्षित रहेगा?हालात जिस तेज़ी के साथ बदल रहे हैं यदि उनके रुख़ को न मोड़ा गया, उसको बदलने की चिन्ता न की गयी तो कुछ ही सालों में इनसानी आबादी आपस में इस तेज़ी से टकराएगी कि सुनामी भी उसके सामने मात खा जाएगी।

शेष : इल्म की हक़ीक़त

छात्र और अध्यापकों की संख्या भी बढ़ रही है, मगर उन बातों के साथ देश व क़ौम को जो फ़ायदा पहुंचना चाहिये था वह नहीं पहुंच रहा है।

अफ़सोस की बात है कि आज हम लोग केवल हर चीज़ को जानने के चक्कर में फंस गये हैं और उसके बाद के दो महत्वपूर्ण क्रम (अमल व अल्लाह की पहचान) को अनदेखा कर जाते हैं। हालांकि कुरआन व हदीस में इल्म (ज्ञान) व अमल (कर्म) दोनों ही मकसूद (वांछित) हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 ने कहा:

“जिसने जाना और अमल किया उसने इल्म हासिल किया।”

इससे पता चला कि अमल (कर्म) के साथ प्रेक्टिस भी ज़रूरी है। इस बात को हदीस शरीफ़ में यूं कहा गया है:

“तुममें सबसे बेहतर वह है जिसने कुरआन सीखा और उसको सिखाया।”

यानि तुममें सबसे बेहतर व्यक्ति वह है जो कुरआन का इल्म हासिल करे फिर उसको प्रेक्टिकल में लाए।

कुरआन और हदीस के इल्म (ज्ञान) को हासिल करने और सिखाने के लिये अच्छे किरदार व चरित्र का होना बहुत ज़रूरी है। यदि कोई व्यक्ति सुन्नत के अधीन न हो और हदीस पढ़ाता हो तो यह अच्छी बात नहीं। इसलिये कि हदीस सुन्नत पर अमल (अनुसरण) एक दूसरे के पूरक हैं। इसी तरह दीन के इल्म (ज्ञान) के द्वारा अल्लाह की रज़ा (स्वीकृति) चाहना भी ज़रूरी है। बग़ैर इसके ऐसे इल्म (ज्ञान) का कोई फ़ायदा नहीं है। क्योंकि हदीस शरीफ़ में अस्ल इल्म (ज्ञान) वाला व्यक्ति उसी को कहा गया है जो अल्लाह के लिये इल्म (ज्ञान) हासिल करे। यदि कोई व्यक्ति दुनिया के लिये इल्म (ज्ञान) हासिल करता है। उसके लिये बड़े कठोर शब्दों का प्रयोग किया गया है। कहा गया है कि ऐसा व्यक्ति जन्नत की ख़ुशबू नहीं सूंघ सकेगा।

रसूलुल्लाह (स0अ0) की जीवनी–कुरआन व सुन्नत की रोशनी में

(महानता व महिमा)

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

रसूलुल्लाह (स0अ0) की महिमा की मांग (तक़ाज़ा) थी कि सामाजिक जीवन में उन बारीकियों पर ध्यान दिया जाए जिनका ध्यान साधारणतयः जीवन में नहीं होता। सहाबा किराम (रज़ि0) से बढ़कर कौन होगा मुहब्बत करने वाला। रसूलुल्लाह (स0अ0) की जो महिमा व आदर उनके दिलों में था वह किसके दिल में होगा। बहुत सी घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं, मगर अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में जगह–जगह पर रसूलुल्लाह (स0अ0) की महिमा व महानता का वर्णन किया है और रसूलुल्लाह (स0अ0) की शान में बेअदबी और गुस्ताख़ी (अशिष्टता) को कुफ़्र बताया है। सहाबा (रसूलुल्लाह स0अ0 के सहयोगी) को संबोधित करके इस पूरी उम्मत को संबोधित किया जा रहा है, अल्लाह तआला कहता हैः

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे मत हुआ करो, और अल्लाह से डरते रहो, इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह ख़ूब सुनता, ख़ूब जानता है। ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ों को नबी की आवाज़ से ऊंचा मत किया करो, और जिस तरह तुम एक–दूसरे को ज़ोर–ज़ोर से पुकारते हो उसी तरह ज़ोर से मत पुकारा करो कि कहीं तुम्हारे सब काम बेकार चलें जाएं और तुम्हें एहसास भी न हो।" (सूरह हुजुरातः 1–2)

आम समाजी जीवन में बातचीत के दौरान आवाज़ का ऊंचा हो जाना कोई विशेष बात नहीं है लेकिन रसूलुल्लाह (स0अ0) के सम्मान को ध्यान में रखने को कहा जा रहा है यह आपके शान के मुताबिक़ (सम्मान के अनुरूप) नहीं कि आवाज़ आपके सामने तेज़ की जाए। आपकी शान में छोटी से छोटी बेअदबी व गुस्ताख़ी (अशिष्टता) कुफ़्र का अनुमान है फिर कर्म बेकार हो जाते हैं। इसलिये कि कुफ़्र व शिर्क के साथ कर्म व्यर्थ हो जाते हैं और उनका कोई वज़न नहीं रह जाता है।

सहाबा के माध्यम से उम्मत को दीक्षा दी जा रही है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) का सम्मान होना चाहिये। बातचीत व बर्ताव में कोई व्यवहार ऐसा न किया जाए जो आप (स0अ0) को तकलीफ़ देने का साधन बन जाए।

बातचीत में सावधानी

यहूदियों का विचार था कि नबी बनी–इस्राईल में ही आ सकता है। रसूलुल्लाह (स0अ0) की नुबूव्वत (अल्लाह के संदेष्टा होने) का उनको यक़ीन था लेकिन केवल इस हठधर्मी में कि नबी बनी–इस्माईल में कैसे आ गया वे रसूलुल्लाह (स0अ0) की नुबूव्वत को स्वीकार नहीं कर रहे थे बल्कि उनकी हमेशा से यह कोशिश थी कि वे रसूलुल्लाह (स0अ0) को नुक़सान पहुंचाए। वे आप (स0अ0) की सभाओं में आते तो भी अपनी नापाक हरकतों से नहीं चूकते थे। बात ध्यान से न सुनते और कहते, ''राइना'' और "राइना" शब्द को खींच कर "राईना" कहते और अपने दिल के फफोले फोड़ते। राइना का अर्थ है "हमारी रिआयत कर दीजिए" वे उसको "राईना" बना देते अर्थात "ऐ हमारे चरवाहे"। अल्लाह ने कहा कि अब कोई "राइना" का शब्द प्रयोग न करे ताकि यहूदियों को इसका अवसर ही न मिले। इरशाद हुआः

"ऐ ईमान वालों! "राइना" मत कहा करो "उनज़ुरना" कहा करो और सुनते रहा करो और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अज़ाब है।" (सूरह बक़राः 104)

इस आयत से एक नियम सामने आता है कि ईमान वालों को ऐसे सभी कामों से बचना चाहिए जिनको साधन बनाकर दूसरों को रसूलुल्लाह (स0अ0) की शान

में गुस्ताख़ी (अशिष्टता) का मौक़ा मिले। मुसलमानों को बहुत सावधानी से जीवन बिताने की आवश्यकता है ताकि किसी को उंगली रखने का अवसर न मिले।

अनुचित सवालों से परहेज़

उम्मत को इससे भी रोक दिया गया कि नबी से हर प्रकार के अनुचित सवाल किये जाएं कि यह एक ओर तो नबी (स0अ0) के तकलीफ़ पहुंचाने का साधन है और आपकी महिमा के अनुरूप नहीं है तो दूसरी इसमें सवाल करने वालो ही के लिये नहीं बल्कि पूरी उम्मत के लिये नुक़सान है। आदेशों में कठोरता का ख़तरा होता है। जो चीज़ फ़र्ज़ नहीं होती डर होता है कि उसको फ़र्ज़ न कर दिया जाए। एक बार एक सहाबी ने रसूलुल्लाह (स0अ0) से विभिन्न सवाल किये। यहां तक कि यह सवाल किया कि क्या हज हर साल फ़र्ज़ है?आप (स0अ0) ने कहा कि ज़्यादा सवाल न करो। यदि मैं कह देता कि हाँ हर साल फ़र्ज़ है, तो फ़र्ज़ कर दिया जाता। क़ुरआन मजीद में यह आयतें उतरीं:

"क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से वैसे ही सवाल करो जैसे पहले मूसा से सवाल किये जा चुके, और जो भी ईमान को कुफ़्र से बदलेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया।" (सूरह बक़रा: 108)

बनी–इस्राईल को जब गाय ज़िबह करने का सीधा हुक्म दिया गया तो यह बड़ा आसान काम था। मगर उन्होंने सवाल पूछ–पूछ कर उसे अपने लिये मुसीबत बना लिया। उनके सवालों से लगता था कि वे वह कार्य करना ही नहीं चाहते हैं। अल्लाह तआला कहता है:

"और लगता न था कि वे ऐसा कर लेंगे।"

(सूरह बक़रा: 71)

"ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ के बारे में मत सवाल करो कि अगर तुम्हारे लिये खोल दी जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और तुम उस वक़्त उनके बारे में पूछोगे जिस वक़्त क़ुरआन नाज़िल हो रहा है तो वह तुम्हारे लिये खोल दी जाएंगी और अल्लाह ने उनको माफ़ कर रखा है और अल्लाह तो बड़ी मग़फ़िरत (क्षमा) फ़रमाने वाला बड़ा हलीम (सहनशील) है।" (सूरह माइदा: 101)

क़ुरआन के नाज़िल (अवतरित) होने के वक़्त इस तरह के सवाल इसलिये अनुचित थे कि बहुत सी बातें प्रकट किये जाने योग्य न थीं। सवालों के नतीजे में उनका ज़ाहिर (प्रकट) किया जाता जो लोगों को बुरा लगता और फिर उस तरह के अनुचित प्रश्न नुबूव्वत की महिमा के विपरीत थे, इसलिये उनसे रोक दिया गया।

अत्यधिक आदर का आदेश

हज़रत ज़ैनब (रज़ि0) से निकाह के बाद आप (स0अ0) ने वलीमा किया। कुछ लोग पहले ही आकर बैठ गये और खाने के बाद भी देर तक बैठे रहे। यह पर्दे से पहले की बात है। उससे आप (स0अ0) की मशग़ूलियत (व्यस्तता) पर फ़र्क़ पड़ा और आप (स0अ0) को तकलीफ़ पहुंची मगर यह उनकी रहमत की शान और इन्तिहाई शफ़क़त (अत्यधिक कृपा) थी कि आप (स0अ0) ने कुछ न कहा। तो उस पर यह आयत नाज़िल हुई:

"ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में दाख़िल मत हो जब तक तुम्हें खाने के लिये इजाज़त न मिल जाए, उसके पकने की राह देखते न रहो, हां जब तुम्हें बुलाया जाए तो दाख़िल हो, फिर जब खा चुको तो अपनी–अपनी राह लो, बातों में जी लगाते मत बैठो, यक़ीनन यह चीज़ नबी को तकलीफ़ पहुंचाती है, बस वे तुमसे शर्म करते हैं और अल्लाह को ठीक बात कहने में कोई शर्म नहीं और जब तुम उनसे कोई सामान मांगो तो पर्दे के पीछ से मांग लो, यह चीज़ तुम्हारे दिलों के लिये भी ज़्यादा पाकीज़गी (की वजह) है और उनके दिलों के लिये भी और तुम्हें इसकी इजाज़त नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुंचाओ और न यह कि उनके बाद उनकी बीवियों से निकाह करो, यक़ीनन यह अल्लाह के यहां बड़ी संगीन बात है।" (सूरह एहज़ाब: 53)

इस आयत का केन्द्र बिन्दु यही है कि किसी भी हालत में कोई ऐसी सूरत न अपनायी जाए जो रसूलुल्लाह (स0अ0) को तकलीफ़ पहुंचा दे कि यह बंड़ी संगीन बात है और इसके नतीजे में हब्त–ए–आमाल (कर्म व्यर्थ) होता है और ईमान निकल जाता है।

इस आयत में पर्दे का भी हुक्म दिया गया और यह भी बता दिया गया कि रसूलुल्लाह (स0अ0) के बाद उनकी बीवियों से निकाह करना किसी के लिये भी ठीक नहीं कि वे उम्मत की माएं हैं। इस काम को संगीन बताया गया कि यह चीज़ आप (स0अ0) की तकलीफ़ का ज़रिया बन सकती थी।

उम्मत पर रसूलुल्लाह (स0अ0) के हक़ में से यह बात बहुत अहम है कि आप (स0अ0) की अज़मत व अदब (महानता व सम्मान) के विपरीत कोई भी काम न किया जाए और आप (स0अ0) का बहुत लिहाज़ (आदर) किया जाए।

महानता की एक निशानी

रसूलुल्लाह (स0अ0) की अज़मत की एक बड़ी निशानी यह भी है कि शुरूआत में मुसलमानों को आदेश दिया गया था कि जब भी आप (स0अ0) से बातचीत करनी हो तो पहले सदक़ा करें, अपने दिल व दिमाग़ को पाक करें, अपने आप को उस महान हस्ती से बातचीत के क़ाबिल करें। इरशाद हुआः

"ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से तन्हाई में बात करना (चाहो) तो तुम तन्हाई में बात करने से पहले सदक़ा दे दिया करो यह तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतर और ज़्यादा पाकीज़ा है, फिर अगर तुम्हें कुछ मयस्सर (उपलब्ध) न हो तो अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत मेहरबान है।" (सूरह माइदाः 12)

लेकिन बाद में परेशानी की वजह से यह आदेश बदल दिया गया और यह आयत उतरीः

"क्या तुम तन्हाई में बात करने से पहले सदक़ा देने से घबरा गये तो जब तुमने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात देते रहो और अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाबरदारी (आज्ञापालन) करते रहो और अल्लाह तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखता है।"

(मुजादिलाः 13)

ऊपर दी हुई आयत को ध्यान में रखते हुए आज भी उलमा इसको मुस्तहब (सवाब का काम) समझते हैं कि जब रसूलुल्लाह के हुज़ूर (दरबार) हाज़िरी हो और सलाम पेश करना हो तो पहले सदक़ा दे दिया जाए यह ज़्यादा बेहतर और ज़्यादा पाकीज़ा है।

इन आयतों में रसूलुल्लाह (स0अ0) की महानता और श्रेष्ठ स्थान की ओर मार्गदर्शन भी है। आदेश उम्मत की आसानी के लिये रद्द कर दिया गया मगर अज़मत (महानता) क़ायम है। आदर का ध्यार रखा जाए, यही ईमान का तक़ाज़ा (मांग) है और यही क़ुरआन का हुक्म है।

तकलीफ़ पहुंचाने पर अल्लाह का प्रकोप

जब रसूलुल्लाह (स0अ0) की अज़मत व मुहब्बत ईमान की अलामत (पहचान) नहीं बल्कि उसकी बुनियाद है, तो आप (स0अ0) को तकलीफ़ पहुंचाने का कितना गंभीर होगा। क़ुरआन मजीद में इस बारे में जगह–जगह मौजूद है। यहूदियों और मुश्रिकों ने और मुनाफ़िक़ों ने यह तरीक़ा बना रखा था और तरह–तरह से आप (स0अ0) को सताते थे। ऐसे लोगों के बारे में कहा गयाः

"जो लोग भी अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ़ पहुंचाते हैं, उन पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की फिटकार है और उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।" (सूरह अलएहज़ाबः 57)

दूसरी जगह कहा गयाः

"क्या उन्हें पता नहीं कि जो भी अल्लाह और उसके रसूल के मुक़ाबले पर आएगा तो उसके लिये जहन्नम की आग है, उसी में हमेशा रहेगा और यही बड़ी रुस्वाई है।" (सूरह तौबाः 63)

सूरह मुजादिला में भी दो जगह यही बात कही गयी हैः

"यक़ीनन जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से टक्कर लेते हैं वे ख़्वार (ज़लील) होंगे, जैसे उनसे पहले के लोग ख़्वार (ज़लील) हुए और हमने खुली आयतें उतार दी हैं और न मानने वालों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है।" (सूरह मुजादिलाः 5)

"यक़ीनन जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की

मुख़ालिफ़त (विरोध) मोल लेते हैं वे ज़लील तरीन (अत्यधिक अपमानित) लोगों में हैं।"

(सूरह मुजादिला: 20)

मुनाफ़िक़ों का तकलीफ़ देने का क्रम लगातार जारी था। वे आपस मे रसूलुल्लाह (स0अ0) के ख़िलाफ़ मश्वरे (राय) करते थे और जब कोई कहता कि यह बातें आप (स0अ0) को पहुंच जाएंगी तो कहते कि क्या फ़र्क़ पड़ता है हम जाकर बात बना लेंगे। आपका हाल तो यह है कि आप सबकी सुन लेते हैं। कुरआन मजीद में इन मुनाफ़िक़ों की बड़ी क़लई खोली गयी है:

"और उनमें बहुत से वे हैं जो नबी को तकलीफ़ पहुंचाते हैं और कहते हैं यह तो सब सुन लेते हैं, आप कह दीजिए कि वे सिर्फ़ तुम्हारे भले को सुनते हैं, अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों (की बात) का यक़ीन रखते हैं और तुममें ईमान वालों के लिये सरापा रहमत हैं और जो लोग भी अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुंचाते हैं, उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

(सूरह तौबा: 61)

इस आयत में बात साफ़ कर दी गयी कि यह आप (स0अ0) की बहुत ही शफ़क़त और रहमत (कृपा) का कमाल है कि आप (स0अ0) सबकी बातें सुनते हैं, मगर आप (स0अ0) ख़ूब जानते हैं कि सही बात किसकी है फिर कह दिया कि जो लोग भी इस तरह की बातें करते आप (स0अ0) को तकलीफ़ पहुंचाते हैं, उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है वे दुनिया में चाहे अपने आप को पहचान लें लेकिन आख़िरत में रुस्वाई ही उनका मुक़द्दर बनने वाली है।

मक्का मुकर्रमा में लोग तकलीफ़ पहुंचाने में आगे–आगे रहते थे, उनमे अबू जहल सबसे आगे था। सूरह अलक़ की आख़िरी की ग्यारह आयतें उसी के बारे में उतरीं, कहा गया:

"आपने उसको देखा जो रोकता है, एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ता है। भला बताइये अगर वह हिदायत पर होता, या तक़्वे की बात कहता, भला बताइये, अगर उसने झुठलाया और मुंह मोड़ा, क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह उसको देख ही रहा है, ख़बरदार अगर वह बाज़ न आया तो हम उसको पेशानी के बाल पकड़कर घसीटेंगे, वह पेशानी जो झूठी है, गुनाहगार है, बस वे अपनी मजलिस वालों को बुला लें, हम दोज़ख़ के फ़रिश्तों को बुला लेंगे, हरगिज़ नहीं आप उसकी बातों में मत आइये और सज्दे किये जाइये और क़रीब होते जाइये।"

(सूरह अलक़: 9–19)

यह अबूजहल की बात है। आप (स0अ0) जब नमाज़ पढ़ते तो वह रोकने की कोशिश करता। एक बार आप (स0अ0) काबा के आंगन में नमाज़ पढ़ रहे थे तो अबू जहल बोला कि फ़लां इलाक़े में ऊंट ज़िबह हुआ है। कोई उसकी ओझड़ी उठा लाए और सजदे की हालत में आप (स0अ0) की पीठ पर रख दे। उक़्बा बिन अबी मुईत उठा और ओझड़ी लाकर आप (स0अ0) की पीठ पर रख दी। हज़रत फ़ातिमा जबकि कमसिन थी लेकिन जब उन्हें पता चला तो उन्होंने आकर किसी तरह ओझड़ी हटाई। एक बार उसने यहां तक कह डाला, "अगर आपने सज्दा किया तो मैं आपकी गर्दन पर पांव रख दूंगा।" आप (स0अ0) ने झिड़क दिया तो बोला, "मेरी पार्टी बड़ी है, मैं लोगों को बुला लूंगा" अल्लाह तआला कहता है कि अब करके देखे, उसकी पेशानी के बाल पकड़कर हम उसको घसीटेंगे जो पेशानी झूठ और मक्कारी से भरी हुई है और वह अपनी पार्टी के लोगों को बुलाए, हम दोज़ख के फ़रिश्तों को बुला लेंगे। हदीस में आता है कि एक बार वह रोकने के लिये आगे बढ़ा फिर अचानक रुक गया, पूछने पर कहने लगा कि मुझे अपने और मुहम्मद (स0अ0) के बीच एक आग भरी ख़न्दक़ नज़र आयी, जिसमें पर रखने वाली कोई मख़लूक़ (प्राणी) थी, इसलिये मैं आगे न बढ़ सका। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया: अगर वह आगे बढ़ता तो फ़रिश्ते उसकी बोटी–बोटी कर डालते, फिर आख़िरी आयत में मुहब्बत भरे अन्दाज़ में आप (स0अ0) से कहा जा रहा है कि आप बेख़ौफ़ होकर सजदे किये जाइये और आगे बढ़ते जाइये।

जमाअत व इमामत

अहकाम व फ़ज़ाइल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इक़्तदा (इमाम की पैरवी) की शर्तें

किसी भी इमाम की इक़्तदा उसी वक़्त सही होगी जब निम्नलिखित शर्तें पायी जा रही हों:

1– इमाम की इक़्तदा की नियत करना। यह ख़्याल रहे कि नियत करना दिल का काम होता है। लिहाज़ा दिल में नियत करना काफ़ी होगा। ज़बान से नियत करना ज़रूरी नहीं है।

2– दोनों के मकान का मुत्तहिद (इमाम और मुक़्तदी का एक जगह होना) होना। इसीलिए अगर दोनों की जगह न हक़ीक़त में मुत्तहिद (एक) हो न हुक्म के एतबार से तो इक़्तदा सही नहीं होगी और अगर इमाम मस्जिद में हो, मुक़्तदी बाहर सड़क पर हो लेकिन सफ़ें वहां तक मुत्तसिल (क्रमवार) हों तो इक़्तदा सही हो जाएगी। इसलिये कि जबकि दोनों हक़ीक़त के एतबार से अलग अलग जगहों पर हैं लेकिन सफ़ मुत्तसिल (लाइनें क्रमवार) होने की वजह से हुकम के एतबार से दोनों की जगह एक मानी जाएगी।

3– दोनों एक फ़र्ज़ पढ़ रहे हों। इसीलिये अगर इमाम अस्र पढ़ा रहा हो तो उसके पीछे ज़ुहर की नियत से इक़्तदा करना सही नहीं होगा।

4– इमाम की नमाज़ सही हो रही हो। इसीलिए अगर किसी वजह से इमाम की नमाज़ फ़ासिद (ग़लत) हो रही हो तो मुक़्तदी (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला) की नमाज़ भी सही नहीं होगी।

5– मुक़्तदी (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला) इमाम के आगे न हो। दोनों बराबर हों तो नमाज़ ठीक हो जाएगी लेकिन अगर मुक़्तदी बढ़ा हुआ हो तो नमाज़ ठीक नहीं होगी और उसका एतबार एड़ी के एतबार से होगा। इसीलिए अगर मुक़्तदी की एड़ियां इमाम की एड़ी के बराबर पीछे हों तो नमाज़ दुरुस्त हो जाएगी, चाहे मुक़्तदी का पैर इमाम के पैर से बड़ा होने की वजह से आगे ही क्यों न निकला हो।

6– मुक़्तदी को इमाम की हरकात व सकनात (अर्थात कब क्या कर रहा है) का इल्म हो रहा हो कि कब रुकूअ व सजदा वग़ैरह कर रहा है चाहे इमाम दिखाई पड़ रहा हो या आवाज़ से इसका पता चल रहा हो या आगे वाले मुक़्तदियों (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वालों) से इसका पता चल रहा हो।

7– नमाज़ के दौरान या इमाम के सलाम फेरने के बाद इसका जान लेना कि इमाम मुक़ीम है या मुसाफ़िर।

8– अरकान (हिस्से) यानि रुकूअ व सजदा वग़ैरह में इमाम के साथ शरीक रहना। इस तरह कि अरकान में इमाम के साथ या उसके बाद जाए। इसलिये अगर इमाम से पहले रुकूअ करे और इमाम के रुकूअ में पहुंचने से पहले उठ जाए तो नमाज़ सही नहीं होगी।

9– मुक़्तदी की हालत अरकान व शराएत (बुनियादी हिस्से व शर्तें) में इमाम जैसी होना। जैसे, रुकूअ सजदा कर सकने वाला मुक़्तदी सिर्फ़ उसी इमाम की इक़्तदा कर सकता है जो रुकूअ व सजदा कर रहा हो और मुक़्तदी रुकूअ व सजदा इशारे से कर रहा हो, इमाम मुकम्मल रुकूअ सजदा कर रहा हो तब भी नमाज़ सही होगी। हाँ इमाम और मुक़्तदी दोनो इशारे से रुकूअ व सजदा कर रहे हों तो नमाज़ सही हो जाएगी। लेकिन अगर इमाम किसी वजह से बैठकर नमाज़ पढ़ रहा हो और मुक़्तदी खड़े हो तों नमाज़ हो जाएगी।

यही मामला शर्तों में है कि इमाम माजूर (किसी बीमारी में लिप्त) हो और उसे लगातार पेशाब टपकने या गैस इत्यादि निकलने की बीमारी हो तो अपने जैसों की इमामत कर सकता है। जिसको उस तरह की बीमारी नहीं है उसकी इमामत नहीं कर सकता।

10– इमाम या मुक़्तदी के दाएं–बाएं या मुक़्तदी के आगे कोई औरत उसी इमाम की इक़्तदा में नमाज़ न पढ़ रही हो, वरना नमाज़ सही नहीं होगी। (शामी)

इमाम किसको बनाना चाहियेः

इमाम बनाते वक़्त इसका ख़्याल रखना चाहिये कि इमाम नमाज़ के एहकाम (आदेश) की जानकारी रखता हो, दीनदार हो, और फ़िस्क़ में मुब्तला (गुनाह–ए–कबीरा में पड़ा हुआ हो) कर देने वाले गुनाहों से बचता हो, कुरआन सही पढ़ता हो, और परहेज़गार हो। (हिन्दिया)

इसीलिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 फ़रमाते हैं कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः

"लोगों का इमाम कुरआन को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने वाला बने। अगर क़िराअत (उच्चारण) में सब बराबर हों तो (नमाज़ का तरीक़ा और) सुन्नत को ज़्यादा जानने वाला बने। अगर सुन्नत में भी सब बराबर हों तो सबसे पहले हिजरत (मदीना पलायन करने वाले लोग) करने वाला (अब यह फ़ज़ीलत उसको मिलेगी जो तक़्वे में बढ़ा हुआ हो) अगर इसमें भी सब बराबर हों तो वह इमामत करेगा जो सबसे ज़्यादा उमर वाला हो और कोई शख़्स दूसरे शख़्स की इमामत उसके अख़्तियार की जगह (अर्थात जहां इमाम तय हो) न करे, और उसके घर में उसकी विशेष बैठने के स्थान पर उसकी इजाज़त के बग़ैर न बैठे। (मुस्लिम)

किन लोगो को इमाम बनाना जायज़ नहींः

अगर कोई शख़्स खुल्लमखुल्ला काफ़िराना अक़ीदा अपनाए हुए हो, जैसे रसूलुल्लाह स0अ0 को आख़िरी नबी न मानता हो, जैसेः क़ादियानी इत्यादि, या हदीस शरीफ़ को हुज्जत (न मानता हो, जैसेः हदीस का मुनकिर (इनकार करने वाला) या कुरआन की तहरीफ़ (बदलाव) का क़ायल हो और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर व उस्मान (रज़ि0) पर लान–तान करता हो, उसके पीछे नमाज़ पढ़ना बिल्कुल जायज़ नहीं है, अगर अनजाने में पढ़ ली हो तो उसको दोहराना ज़रूरी होगा। इसलिये कि उसके पीछे नमाज़ सही ही नहीं है। (शामी)

किन लोगो की इमामत मकरूह हैः

निम्नलिखित लोगो के पीछे नमाज़ मकरूह है। मस्जिद की कमेटी को चाहिये कि ऐसे लोगो को इमाम न बनाया जाए, बल्कि शर्तें पूरी करने वाले किसी दीनदार को ही इमाम बनाया जाए।

1– फ़ासिक़ की इमामतः फ़ासिक़ (बड़े गुनाहों का करने वाला) को इमाम बनाना एक मकरूह तहरीमी है और से मुराद वह शख़्स है जो खुल्लमखुल्ला बड़े–बड़े गुनाहों को करने वाला हो जैसेः शराबी, ज़िना करने वाला, ब्याज खाने वाला, झूठ बोलने वाला या उसी तरह के गुनाह का आदी हो इसमें वह शख़्स भी शामिल है जो दाढ़ी छिलाता हो या एक मुश्त (मुट्ठी) से अधिक काटता हो या बिना किसी वजह पायजामा या लुंगी वग़ैरह टख़्ने के नीचे रखता हो या जिसके घर में औरतें जिन पर वह अख़्तियार रखता है पर्दा न करती हों और वह उनकी रोक–टोक भी न करता हो, तो इस तरह के लोगों को इमाम न बनाया जाए जबकि कराहत तहरीम के साथ नमाज़ हो जाएगी और जमाअत की फ़ज़ीलत हासिल हो जाएगी। (शामी)

2– बिदअती की इमामतः बिदअती के पीछे भी नमाज़ पढ़ना मकरूह तहरीमी है। बिदअती वह है जो रसूलुल्लाह स0अ0 से कथनी व करनी ख़िलाफ़ कुछ और मतलब की तावील करके (अर्थ निकालकर) उस पर अक़ीदा रखता हो लेकिन उसका एतक़ाद कुफ़्र व शिर्क तक न पहुंचा हो अगर कुफ़्र व शिर्क का करने वाला हो जाए तो पीछे बताया जा चुका है कि उसके पीछे नमाज़ ठीक नहीं होगी।

3– जिन लोगों के बारे में शक हो कि शायद

इल्म–ए–दीन को नहीं हासिल कर पाएं होंगे, या पाकी का ख़्याल नहीं रख पाए होंगे या जिसको ऐसी बीमारी हो जिससे लोगो को घिन आती हो तो उनको इमाम बनाना मकरूह तहरीमी होता है। लेकिन अगर वही इमामत की शराएत पूरी कर रहे हों दूसरे इल्म व तक़्वा में उनसे कमतर हों तो उनको इमाम बनाने में ज़र्रा बराबर भी कराहत नहीं है। जैसे नाबीना शख़्स, कोढ़ी, या एक हाथ या पैर से विकलांग शख़्स।

4– नाबालिग़ की इमामतः नमाज़ चाहे फ़र्ज़ हो या तरावीह की हो नाबालिग़ के पीछे जायज़ नहीं है। कोई भी बच्चा जब पन्द्रह साल का हो जाए तो शरीअत के अनुसार बालिग़ हो जाता है चाहे उसकी अलामत (पहचान) ज़ाहिर हो या न हो और बारह साल से पहले बालिग़ नहीं माना जाएगा। जब बच्चा बारह और पन्द्रह साल के बीच का हो तो एहतलाम (वीर्य स्खलन) जैसी कोई निशारी पायी जाती हो तो उसे बालिग़ माना जाएगा और इस तरह की कोई निशानी न पायी जाती हो उसे बालिग़ नहीं माना जाएगा। (शामी)

औरतों की इमामतः

यह मामला पीछे आ चुका है कि औरत मर्दों की इमामत नहीं कर सकती है। अगर मर्द औरत को इमाम बना दें तो नमाज़ सही नहीं होगी लेकिन अगर औरत औरतों की इमामत करे तो यह मकरूह तहरीमी है। चाहे फ़र्ज़ नमाज़ हो या तरावीह की नमाज़ हो। फिर भी अगर औरतें ऐसा करें तो जो औरत इमाम बन रही है मर्दों की तरह उसको आगे नहीं रहना चाहिए बल्कि सफ़ के बीच में रहना चाहिये। अगर औरत इमाम मर्द इमाम की तरह आगे बढ़ जाए तो गुनाहगार होगी। (किताबुल मसाएल)

इसकी दलील यह है कि हज़रत आयशा रज़ि0 रमज़ान के महीने में औरतों की इमामत करती थीं और बीच सफ़ में खड़ी होती थीं (किताबुल आसार)

इसी तरह हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से भी इमामत की रिवायत मनकूल है। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा)

नमाज़ लम्बी करना

इमाम को हर नमाज़ में सुन्नत की मिक़दार (मात्रा) में क़िराअत करनी चाहिये। मसनून मिक़दार (सुन्नत के अनुसार मात्रा) से ज़्यादा क़िराअत करना मकरूह तहरीमी है। (शामी)

इसीलिए हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमायाः जब तुममें से कोई लोगों को नमाज़ पढ़ाए तो नमाज़ हल्की रखे इसलिए कि उनमे बीमार, कमज़ोर व बूढ़े भी होते हैं और जब अपनी यानि अकेले की नमाज़ पढ़े तो जितना चाहे लम्बी करे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

इमाम बाद वाली सुन्नतें कहां पढ़ेः

अगर मस्जिद बहुत तंग न हो तो इमाम को चाहिये कि बाद वाली सुन्नतें इत्यादि मुसल्ले से हटकर पढ़े वरना वहीं पढ़ना मकरूह तन्ज़ीही होगा लेकिन अगर जगह कम है तो हर्ज की कोई बात नहीं। (शामी)

जहां तक मुक़्तदी और मुनफ़रिद (अलग नमाज़ पढ़ने वाले) का संबंध है वे जहां फ़र्ज़ पढ़ें वहीं नवाफ़िल इत्यादि भी पढ़ सकते हैं।

सलाम फेरने के बाद क्या करेः

जिन नमाज़ों के बाद सुन्नतें हैं, उनमें फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद रसूलुल्लाह स0अ0 सिर्फ मांगने के लिये बैठते थे। (मुस्लिम)

और फ़ज्र व अस्र में दाएं या बांए या मुक़्तदियों की तरफ़ रुख़ कर लिया करते थे, इमाम को इसी पर अमल करना चाहिए। (शामी)

इस्लाम और कट्टरता

अज़ीज़ुल हक़ उमरी

इस्लाम धर्म पर हिंसा का आरोप कोई नया नहीं है। हर युग में जब नबियों (संदेष्टाओं) ने अपनी क़ौम (समुदाय) को एकेश्वरवाद (तौहीद) का संदेश सुनाया तो उस समय की ज़ालिम ताक़तो ने उन पर हिंसा का आरोप लगाकर उनके साथ हिंसा के लिये अपने आवारा बदमाशों को तैयार किया और इस्लाम व उसके मानने वालो पर अत्याचार करने का रास्ता निकाला।

जब मूसा (अलै0) ने फ़िरऔन को एकेश्वरवाद की ओर बुलाया और वह उसका कोई जवाब नहीं दे सक तो उसने कहाः

"मुझे छोड़ दो मैं मूसा को मार डालूं क्योंकि मुझे यह डर है कि वह तुम्हारे धर्म (रीति–रिवाज) को बदल देगा।"

जब नबियों के सरदार सम्पूर्ण दीन के साथ पूरी दुनिया के इनसानो के मार्गदर्शन के लिये आये तो मक्का के मूर्तिपूजक आपके एकेश्वरवाद की ओर आमन्त्रण के दुश्मन हो गये और आप पर और ग़रीब व कमज़ोर मुसलमानों पर हिंसा के पहाड़ तोड़ने लगे तो आप (स0अ0) ने सहाबा किराम को हब्शा हिजरत (पलायन) करने का आदेश दिया और जब वे छिप–छिपाकर हब्शा पहुंचे तो अम्र बिन आस के नेतृत्व में वहां भी कुरैश के कुछ प्रभावशाली लोग पहुंचे और हब्शा के बादशाह से यह शिकायत कीः

"हम आपस में मिलकर सुकून से रह रहे थे और उन्होंने एक नया दीन बनाकर हमारे अन्दर मतभेद पैदा कर दिया इसलिये उन्हें हमारे हवाले कर दिया जाए, हमारे बड़े उनका फ़ैसला करेंगे।"

पड़ताल के लिये बादशाह ने मुसलमानों को दरबार में बुलाया तो हज़रत जाफ़र रज़ि0 ने बताया किः

"ऐ बादशाह! हम बुतों की पूजा करते थे आपस में लड़ते और नाजायज़ चीज़े खाते थे, तो अल्लाह ने हम में एक नबी को भेजा जिसने हमें तौहीद (एकेश्वरवाद), सभ्यता व मानवता की शिक्षा दी।" यह सुनकर बादशाह ने उनका समर्थन किया और उन्हें अपने देश में रहने की आज्ञा दे दी। इस स्थिति को देखकर अब एक नयी बात यह निकाली गयी कि ये ईसा (अलै0) के बारे में ग़लत आस्था रखते हैं।

बादशाह ने मुसलमानों को दोबारा बुलवाया और पड़ताल की। हज़रत जाफ़र रज़ि0 ने बादशाह को सूरह मरियम की आयतें सुनायीं और उसने ज़मीन से एक तिनका उठाया और कहा कि ईसा इससे इतने ज़्यादा भी न थे और कुरैश को मायूस व नाकाम होकर वापस आना पड़ा।

इसी से यह भी प्रकट होता है कि हब्शा जो उस समय ईसाईयों का देश था वहां ईसा को अल्लाह का बन्दा और नबी ही माना जाता था और ईसाईयों की आस्था भी इसी में थी और त्रिदेववाद व ईसा के ख़ुदा का बेटा होनी की ग़लत आस्था और शिर्क का अक़ीदा (बहुदेववाद) इसके बाद की पैदावार है जो इस समय के अधिकतर ईसाईयों की आस्था है और जैसे–जैसे ईसाईयों में शिर्क की इस आस्था का क्षेत्र बढ़ता गया वे इस्लाम व एकेश्वरवाद के दुश्मन होते चले गये और यहूदियों के साथ मिलकर जो कभी यहूदियों के सबसे बड़े दुश्मन थे इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध हिंसा का आरोप लगाकर मुसलमान और मुस्लिम देशों को राख और ख़ाक़ का ढेर बना रहे हैं।

अफ़ग़ानिस्तान व ईराक़ व सीरिया के बाइस लाख से भी अधिक मुसलमानों का ख़ून करने के बाद भी उनकी नफ़रत व दुश्मनी के शोले भड़क रहे हैं और वे हिंसा के झूठे आरोपों के द्वारा इस धरती से इस्लाम व मुसलमानों का नाम व निशान मिटाने का सपना देख रहे हैं। वे यह नहीं चाहते कि मुसलमान एकेश्वरवाद में आस्था रखें और अल्लाह के दिये हुए आदेशों का पालन करें। वे पूरी दुनिया को अपनी हिंसा के बल पर बहुदेववादी व पथभ्रष्ट करना चाहते हैं और सबका सर अपनी ख़ुदाई के सामने झुकवाना चाहते हैं जिसे दुनिया के ग़ैरतमन्द और दीनदार मुसलमान कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते और ऐसे नाज़ुक समय में इस्लाम यह आज्ञा देता है कि मुसलमान अपने दीन व ईमान और सम्मान की सुरक्षा के लिये एक साथ हो जाएं वरना इस्लाम ने

कभी यह शिक्षा नहीं दी है कि मुसलमान किसी पर हिंसा और अत्याचार करें, क्योंकि इस्लामः

1– स्वयं को पूरी इनसानी दुनिया का दीन (धर्म) घोषित करता है। फिर भी उसका ऐलान है कि दीन में ज़बरदस्ती सही नहीं जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे काफ़िर रहे लेकिन आख़िरत (परलोक) का बदला अलग है। इस्लाम ने यह पाठ पढ़ाया है कि दीन की दावत के बारे में बेहतर रूप को अपनाया जाए कि दुश्मन भी दोस्त बन जाए। इस्लाम की यह शिक्षा है कि जो अल्लाह को छोड़कर दूसरे माबूदों को पुकारते हों उनके माबूदों की बुराई न की जाए ताकि वे अज्ञानतावश अल्लाह की शान में कोई गुस्ताख़ी (अशिष्टता) न करें।

इस्लाम की मूलभूत आस्था में यह बात है कि सभी नबियों और आसमानी किताबों पर ईमान लाया जाए और सबका सम्मान किया जाए। नबियों में कोई भेदभाव न किया जाए जबकि दुनिया के झूठ के पुजारी इस्लाम के नबी का अपमान करके मुसलमानों को भड़काते हैं और खुश होते हैं और उसे राय की आज़ादी अर्थात अभिव्यक्ति की स्वतंन्त्रता का नाम देते हैं।

इस्लाम दुनिया के सभी इनसानों को एक ही मां–बाप की औलाद बताता है और इंसानियत में सबको बराबर अधिकार देता है और सबके साथ अच्छा बर्ताव और न्याय करने की शिक्षा देता है। इसमें जात–पात का बंटवारा और काले–गोरे का अन्तर नहीं है जो दूसरे लोगो ने अपना रखा है।

इस्लाम सारी ज़मीन को अल्लाह की मानता है इसमें वतन व देश का कोई ऐसा बंटवारा नहीं है जो एक देश के लोगो को दूसरे देश के लोगो से कमतर बताए।

इस्लाम में दुनिया के सभी मुसलमान एक साथ एक ही मस्जिद में एक ही लाइन में खड़े होकर नमाज़ अदा करते हैं जबकि दूसरे धर्मों में अछूत धर्मस्थल में प्रवेश नहीं कर सकते। गोरे एवं कालों के क्लेसा (चर्च) अलग–अलग होते हैं।

इस्लाम की यह सब शिक्षाएं इस बात का प्रमाण हैं कि मुसलमान कभी हिंसा का रास्ता नहीं अपना सकता है। हिंसा व अत्याचार कुफ़्र व शिर्क की पैदावार हैं और बातिल परस्तों (अत्याचारियों) ने सदा ईमान वालों के विरुद्ध हिंसा का मार्ग अपनाया है क्योंकि उनके पास कोई सच्चा धर्म नहीं होता और वे स्वयं ख़ुदा बनकर ईंट, पत्थर व विभिन्न धातुओं से अपनी मूर्ति बनाते हैं और मुसलमानों को भी उनके सामने सज्दा कराना चाहते हैं और जब तक वे ज़बान से तकलीफ़ पहुंचाते हैं मुसलमान उन्हें बर्दाश्त करते हैं लेकिन जब उनकी मस्जिदों और उनकी जान व माल और इज़्ज़त व आबरू पर हमला होता है तो ग़ैरतमन्द मुसलमान देश व जान व माल की सुरक्षा हेतु अपने संभव साधनों के साथ अपना कर्तव्य पूरा करने के लिये जान हथेली पर रख लेते तो उन पर हिंसा का आरोप लगाया जाता है। क्या वे यह चाहते हैं कि वे भी उन्हीं की भांति हो जाएं। अफ़ग़ानिस्तान हो या ईराक़, हिंसा किसने आरम्भ की? अफ़ग़ानियों ने कब अमरीका व यूरोप पर बमबारी की थी?उनके पास कितने असलहों के कारखाने हैं? ईराक़ियों ने कब अमरीका व यूरोप के ख़िलाफ़ अपने रसायनिक हथियारों का प्रयोग किया था?फिर क्यों मानवता का ढिंढोरा पीटने वालों ने यहां के लाखों निर्दोष मुसलमानों को अपनी बमबारी का निशाना बनाया और उनकी अर्थव्यवस्था की तबाह कर दिया?क्या हिंसा और उत्सुकता इसके अलावा कोई चीज़ है?और इसके बावजूद इस्लाम और मुसलमानों पर हिंसा का आरोप?यह कौन सी मानवता और कहां का न्याय है?

जब इस्लाम धर्म के बारे में किसी पर हिंसा व अत्याचार की आज्ञा नहीं देता और न मुसलमानों ने कभी किसी को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया है और न इस्लाम ऐसे व्यक्तियों को मुसलमान मानता है जो स्वयं इस्लाम को न मानता हो और उन्हें अपने रीति–रिवाजों पर अमल करने से रोकता हो तो फिर यदि मुसलमान अपने धर्म व आस्था पर अमल करता है तो उस पर हिंसा कहां तक सही है?इस्लाम का साफ़ ऐलान है किः

"ऐ नबी! कह दो, मैं उनकी पूजा नहीं कर सकता जिनकी पूजा तुम करते हो, न इस समय और न भविष्य में, तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन है और हमारे लिये हमारा दीन (धर्म) है।"

इस्लाम ने यह अवश्य कहा है किः अल्लाह ने हिदायत का रास्ता बता दिया है अब जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे इनकार करे, लेकिन आख़िरत में दोनो का बदला अलग है।

उन्नति के क्षेत्र में मुस्लिम देशों की रफ़्तार?

डॉक्टर जुबैर ज़फ़र ख़ान

"इस्लामी दुनिया में उन्नति की वर्तमान स्थिति" पर प्रकाश डालते हुए अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में इस्लामिक विभाग के असिस्टैन्ट प्रोफ़ेसर डॉक्टर ज़बैर ज़फ़र ख़ान ने आज यहां इन्सटीट्यूट ऑफ़ आब्जेक्टिव स्टडीज़ में लेक्चर देते हुए कहा कि दुनिया के कुछ विशेष देशों से तुलना करने पर यह वास्तविकताएं सामने आती हैं कि उन्नति के मामले में मुस्लिम बहुसंख्यक देश उनसे काफ़ी पीछे हैं। उन्होंने कहा कि आबादी के हिसाब से इस समय दुनिया में ईसाई 33.3 प्रतिशत जबकि मुसलमानों की आबादी 22.74 प्रतिशत और हिन्दुओं की जनसंख्या 13.78 प्रतिशत है। मुसलमानों की वर्तमान आबादी 1.65 बिलियन है और यहूदियों की आबादी से लगभग 117 गुना ज़्यादा है। आबादी के हिसाब से इन्डोनेशिया में सबसे अधिक मुसलमान रहते हैं लेकिन क्षेत्रफल के एतबार से क़ज़ाख़िस्तान सबसे बड़ा देश है। इसी प्रकार 54 मुस्लिम देश ऐसे हैं जिनका क्षेत्रफल दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में 20.3 प्रतिशत है जबकि अमरीका का 6.4 प्रतिशत, चीन का 6.5 प्रतिशत और यूरोपियन यूनियन का 2.94 प्रतिशत है। दुनिया के 775 मिलियन अनपढ़ लोगो में से तीन चौथाई भारत, चीन, पाकिस्तान, बंग्लादेश, नाइजीरिया, इथोपिया, मिस्र, ब्राज़ील, इन्डोनेशिया और कांगो में रहते हैं। यहां यह बात विचार करने योग्य है कि इन दस देशो में से पांच देश ऐसे हैं जो मुस्लिम बहुसंख्यक देश हैं।

दुनिया की यूनिवर्सिटियों की संख्याओं की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि अमरीका में उनकी संख्या 6500 है, ब्राज़ील में 1872, जापान में 774 और भारत में 622 हैं। जहां तक मुस्लिम देशों का संबंध है तो इन्डोनेशिया में इन यूनिवर्सिटयों की संख्या 545, तुर्की में 163, मराकिश में 150 और ईरान में 140 यूनिवर्सिटयां हैं। मुस्लिम देशों में इन यूनिवर्सिटयों की कुल संख्या 2621 हैं। उन्होंने कहा कि 2005 और 2012 के बीच प्रति दस लाख लोगो पर रिसर्च स्कॉलरों की संख्या त्यूनेशिया में 1837 और मलेशिया में 1643 थी। जबकि इसके विपरीत जापान में यह संख्या 5158 और अमरीका में 3979 थी। इसी तरह 2010 में त्यूनेशिया में पीएचडी किये हुए लोगों की संख्या 1863, तुर्की में 884 और ईरान में 751 थी। मुस्लिम देशों में पीएचडी किये हुए लोगों की कुल संख्या 5933 थी जबकि अकेले चीन में यह संख्या 48987 और अमरीका में 48069 थी। भारत में 8900 पीएचडी किये हुए लोग थे। यहां यह भी पहलू ध्यान देने योग्य है कि चीन, अमरीका, फ़िनलैण्ड, आइसलैण्ड और डेनमार्क जैसे देशों में व्यक्तिगत रूप से पीएचडी करने वालों की संख्या मुस्लिम बहुसंख्यक देशों की कुल संख्या से कहीं अधिक रही। जहां तक लाइब्रेरियों का संबंध है तो नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ मलेशिया में 1,30,000 किताबें हैं जबकि किंग सऊदी यूनिवर्सिटी, सऊदी अरब में 1,10,000, तक़सीम अतातुर्क लाइब्रेरी तुर्की में 6,00,000, इस्तम्बूल टेक्निकल यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में 5,00,000 किताबें और पाकिस्तान की पंजाब यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में 5,00,000 किताबें हैं। इसके विपरीत अमरीका की लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस में तीन करोड़ पैतालिस लाख अट्ठाइस हज़ार आठ सौ अट्ठारह (3,45,28,818) और नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ चाइना में दो करोड़ नवासी लाख अस्सी हज़ार सात सौ सतहत्तर (2,89,80,777) किताबें हैं।

नोबेल पुरुस्कार प्राप्त लोगो का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि सन् 1901 से केवल 13 मुसलमानों को नोबल पुरुस्कार दिया गया जबकि यह पुरुस्कार प्राप्त करने वाले ईसाई 423, यहूदी 193 और हिन्दू 8 थे। इसी प्रकार 150 नोबेल ईनाम पाने वाले लोग हावर्ड

यूनिवर्सिटी, 91 कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, 84 एम आई टी और 27 आक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी के थे। दुनिया के विभिन्न देशों में जीडीपी के प्रतिशत का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि 2013 में इन्डोनेशिया में दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में यह प्रतिशत 0.98:, तुर्की में 0.93:, सऊदी अरब में 0.84:, सयुंक्त अरब अमीरात में 0.45: और मलेशिया में 0.35: थी। मुस्लिम बहुसंख्यक देशों की कुल जीडीपी का प्रतिशत 7.7 प्रतिशत था। इसके विपरीत अन्तर्राष्ट्रीय बैंक के आंकड़े के अनुसार यूरोपीय यूनियन की जीडीपी का प्रतिशत 20.5 प्रतिशत, अमरीका की 19.2 प्रतिशत, चीन की 10.5 प्रतिशत, जापान की 5.6 प्रतिशत और भारत की 2.1 प्रतिशत थी। उन्होंने कहा कि केवल सात मुस्लिम बहुसंख्यक देश ऐसे हैं जिनका जीडीपी रवाएल डच शेल से ज़्यादा आए जबकि 44 प्रतिशत मुस्लिम बहुसंख्यक देश ऐसे हैं जिनका जीडीपी रवाएल डच शेल से नीचे था। जहां तक मुस्लिम बहुसंख्यक देशों के एक्सपोर्ट का संबंध है तो यह 2012 में 2.190: ट्रिलियन था, जबकि अकेले चीन का एक्सपोर्ट 2.021: ट्रिलियन था और अमरीका का 1.612: ट्रिलियन डॉलर था। उन्होंने कहा कि दुनिया की केवल 16 : मुस्लिम आबादी निर्माण व्यापार में लगी हुई है। जहां तक बेरोज़गारी का संबंध है तो इसमें भी मुस्लिम देशों की कारकरदगी काफ़ी निचले पायदान पर है। मिसाल के तौर पर बरकेन्या फ़ास्को की 77 प्रतिशत आबादी बेरोज़गार है। इसी प्रकार तुर्कमेनिस्तान में 7 प्रतिशत, जेबोती में 59 प्रतिशत, सेनेगल में 46 प्रतिशत, कोसोव में 45.3 प्रतिशत और यमन में 35 प्रतिशत आबादी बेरोज़गारी का शिकार है।

इस अवसर पर अपने भाषण में आई ओ एस डाटा बैंक के मैनेजर एम. एम. ख़ान ने आई ओ एस डाटा बैंक का परिचय कराते हुए कहा कि आई ओ एस के विभिन्न में डाटा एकत्र किया है। इस दृष्टिकोण से यह बात स्पष्ट हो रही है कि विभिन्न क्षेत्रों में मुसलमान बहुत पीछे हैं। अपने अध्यक्षी के भाषण में आई ओ एस स्टेट सेक्रेटरी जनरल प्रोफ़ेसर अफ़ज़ल वानी कहा कि इस विषय का चुनाव इसलिये किया गया है कि हम अपने बारे में स्वयं जान सकें कि हम दुनिया की उन्नति में किस स्थान पर खड़े हैं और आईओएस इस तरह का प्रोग्राम आगे भी करता रहेगा ताकि हम अपना विश्लेषण करते रहें।

फ़ास्ट फूड – दिमाग़ के लिये ख़तरा

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि बूस्ट, बर्गर व फ्राइज़ खाने वालों की कमर दोहरी हो जाती है। लेकिन एक नयी रिसर्च यह बताती है कि इस प्रकार के फ़ास्ट फूड से न केवल वज़न बढ़ता है बल्कि दिमाग़ पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शोधकर्ताओं ने अपनी शोध में देखा है कि चौदह साल की आयु में जिन नवयुवको ने ऐसे पश्चिमी खाद्य पदार्थ अधिक मात्रा में प्रयोग किये थे, सत्तर वर्ष की आयु में मस्तिष्क की योग्यताओं के प्रदर्शन में उन्होंने कम नम्बर प्राप्त किये।

परीक्षण में यह देखा गया कि जिन लोगो ने इस प्रकार के भोजन अधिक ग्रहण किये थे जिनमें डीप फ्राई किये हुए आलू, लाल किया हुआ गोश्त और साफ़्ट ड्रिंक्स शामिल थीं उनके प्रयोग के कारण सवालों पर प्रतिक्रिया के समय पर असर पड़ा था। उनकी दिमाग़ी क्षमता, दृष्टि, सीखने व याद रखने की क्षमता प्रभावित हुई थी। इसके विपरीत जिन लोगों ने फल व पत्ते वाली सब्ज़ियों का अधिक प्रयोग किया था उनकी दिमाग़ी क्षमता बेहतर व सकारात्मक रही। शोधकर्ता डॉक्टर ऐन्ट न्याराडी ने साइंस नेटवज़िक को बताया इसका कारण संभावित रूप से हरे पत्तों वाली सब्ज़ियों में मौजूद खाद्य पदार्थ हो सकते हैं जो दिमाग़ की क्षमता बढ़ाने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डॉक्टर नियाराडी ने कहा कि तले हुए भोजन व लाल गोश्त में ओमेगा–६ फ़ैटी एसिड्स बहुत अधिक मात्रा में होते हैं और हो सकता है कि यह चीज़ दिमाग़ की क्षमताओं को कमज़ोर करने का कारण बन रही हो। उन्होंने बताया कि शरीर में खाद्य पदार्थ उस समय अच्छी तरह से मिलते हैं जब ओमेगा–३ और ओमेगा–६ फ़ैटी एसिड्स का अनुपात १:१ होता है किन्तु पश्चिमी खाद्य पदार्थों में यह अनुपात १:२० या १:२५ तक बिगड़ जाता है। उन्होंने बताया कि जमने वाली चिकनाई और सादा कार्बोहाइड्रेट्स के बहुत अधिक प्रयोग से दिमाग़ के उसी हिस्से की कार्यक्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिसे हिप्पोकैम्पस कहते हैं और जो सीखने व समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यस्कता के दौरान उसका शरीर बढ़ता रहता है। उन्होंने कहा कि बच्चा जब व्यस्क होता है, उस समय उसके दिमाग़ को बेहतरीन खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती है जो न मिलने की स्थिति में दिमाग़ कमज़ोर हो सकता है।

तुर्की में
असफल सैन्य विद्रोह की पृष्ठभूमि
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

15–16 जुलाई की मध्यरात्रि में तुर्की के एक सैन्य जत्थे ने सत्ता का तख़्तापलटने का प्रयास किया जिसे प्रशासन की जागरुकता व बुद्धिमत्ता व जनता की राजनीतिक समझ ने असफल कर दिया। सैन्य विद्रोह की इस असफलता से बहुत से देशो में मायूसी की लहर दौड़ गयी जिनमें अमरीका व इस्राईल पहले स्थान पर हैं। क्योंकि तैय्यब उर्दगान के शासन के कारण इस क्षेत्र में अमरीका व इस्राईल और उनकी सहयोगी शक्तियों को पराजित होना पड़ा है।

विद्रोह के प्रयास का आरम्भ लगभग साढ़े सात बजे आरम्भ हुआ। इस्ताम्बूल के मध्य में स्थित पुलों पर टैंक खड़े कर दिये गये। कुछ देर के बाद इन्क़रा की सड़कों पर सेना दनदनाती नज़र आने लगी। लड़ाकू विमानों ने भी शहर में उड़ान भरनी शुरू कर दी। मीडिया पर कन्ट्रोल कर लिया गया और सरकारी टी.वी. चैनल से यह घोषणा हुई कि देश में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया है और कर्फ़्यू लगा दिया गया है और सत्ता की डोर अब सेना के हाथों में है और एक "अमन कौन्सिल" अब देश चलाएगी।

सैन्य विद्रोह की घटनाएं उस समय हुईं जब राष्ट्रपति रजब तैयब उर्दगान देश से बाहर थे और चूंकि देश की मीडिया पर सेना का क़ब्ज़ा हो चुका था इसलिए उन्होंने "सोशल मीडिया" का सहारा लिया और "फ़ेस टाइम" के द्वारा भेजे गये अपनी जनता के नाम संदेश में जनता से बाहर निकलने और उस सैन्य विद्रोह को नाकाम बनाने की अपील की जिसके बाद इन्क़रा और इस्तम्बूल में जनता भारी संख्यां में सड़कों पर निकल आयी। आंखों में गुस्सा व जुनून, दिलों में जोश, देश की सुरक्षा और अपने शासक के प्रति सद्भावना व वफ़ादारी। जिसका नतीजा टकराव की शक्ल में ज़ाहिर हुआ। सेना ने ताक़त भी आज़माई लेकिन लोगों के इस जुनून के सामने उन्हें घुटने टेकने पड़े। कुछ टैंक छोड़कर भाग गये और कुछ ने हथियार डालकर स्वयं को जनता के हवाले कर दिया और इतिहास में पहली बार पूरी दुनिया की मीडिया ने वे दृश्य भी प्रसारित किये जिनमें जनता ने सैनिकों को क़ैद किया और देश की रक्षा स्वयं वहां के लोगों ने की।

तुर्की के इस सैन्य विद्रोह में बड़ी संख्या में मौतें भी हुई। मरने वालों में 115 से अधिक विद्रोही सैनिक, 41 पुलिस वाले और 84 नागरिक शामिल थे। इनके अतिरिक्त ज़ख़्मियों की संख्या 1100 से भी अधिक है।

तुर्क शासन ने इस विद्रोह के बाद क्रैक डाउन का सिलसिला शुरू किया। हज़ारों सैनिकों को या तो हटा दिया गया या गिरफ़्तार कर लिया गया जिनमें 112 के क़रीब फ़ौजी जरनल और एडमिरल और दो हज़ार से अधिक जज भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त लगभग पचास हज़ार से अधिक सरकारी कर्मचारियों को पद से हटा दिया गया है। शिक्षा विभाग से संबंध रखने वाले बहुत से लोगों के देश छोड़ने पर पाबन्दी लगा दी गयी और कई यूनिवर्सिटियों के ज़िम्मेदारों से इस्तीफ़ा ले लिया गया। तुर्क मीडिया के अनुसार 34 पत्रकारों के पहचान पत्र इत्यादि निरस्त कर दिये गये एवं हिरासत में लिये गये व फ़रार लोगों में से लगभग 10856 पासपोर्ट भी रद्द कर दिये गये। इसके अतिरिक्त सुरक्षा के मद्देनज़र 283 राष्ट्रपति के सुरक्षागार्डों को भी हिरासत में ले लिया गया।

इस्राईल के शासकों ने विद्रोह की असफलता पर दुख प्रकट किया है। इस्राईली सैन्य कार्यों के माहिर "रोन बिन यशाई" ने इस्राईल के प्रसिद्ध अख़बार "यदऊत अहरूनूत" को दिये गये बयान में कहा कि, "तुर्की में विद्रोहियों ने सबसे बड़ी ग़लती यह की थी कि उन्हें अपनी कार्यवाहियों का आरम्भ उर्दगान की गिरफ़्तारी से करना चाहिये था। यदि विद्रोही यह ग़लती न करते तो आज परिणाम कुछ और ही होते।"

अरब पत्रकारिता सूत्रों ने इस बात को स्वीकार किया है कि तुर्की में हुए इस सैन्य विद्रोह के पीछे तुर्क वायुसेना का पूर्व अध्यक्ष जनरल आउज़ तोक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसे इस्राईल का बहुत ही क़रीबी समझा जाता है। वह 1996 से लेकर 1998 तक तिल अबीब में तुर्क दूतावास का मिल्ट्र अताशी भी रहा। इस दौरान उसके इस्राईली खुफ़िया एजेंसी मोसाद से भी गहरे संबंध थे। अतीत में रोम सागर में होने वाली अमरीका, इस्राईल, तुर्की के साझा सैन्य अभ्यास के दौरान भी इस तुर्क जनरल का इस्राईली शासकों से क़रीबी संबंध रहा है। पिछले दिनों अगस्त में जनरल को फ़ौज से निवृत तो कर दिया गया था फिर भी वह राष्ट्रीय सुरक्षा कौन्सिल का मुख्य सदस्य था।

तुर्क शासन ने इस असफल सैन्य विद्रोह का मास्टर

माइन्ड फ़तेह उल्लाह गोलन नामक व्यक्ति को घोषित किया है जो इस समय अमरीकी राज्य पेन्सिलवेनिया के शहर सालिसबर्ग का निवासी है।

2013 ई0 में फ़तेहउल्लाह गोलन ज़ाहिरी तौर पर तैयब उर्दगान के समर्थकों में शामिल थे लेकिन उनके गुप्त क़दमों विशेषतयः उच्च पदाधिकारियों के फ़ोन रिकार्ड करने, इसी प्रकार जाली आडियो बनाने और फिर उनको ब्लैक मेल करने और विभिन्न तरीक़ों से उर्दगान की पार्टी पर कन्ट्रोल प्राप्त करने की कोशिश की घटनाओं के बाद उर्दगान और गोलन के बीच मतभेद शुरू हुए और 2013 में जब उर्दगान के ख़िलाफ़ प्रदर्शन हुए तो उन प्रदर्शनों में लगभग नब्बे प्रतिशत गोलन के समर्थक शामिल थे।

फ़तेह उल्लाह गोलन की जड़े तुर्की में इतनी गहरी हैं कि हर विभाग से अब तक हज़ारों की संख्या में उनके समर्थक गिरफ़्तार किये जा चुके हैं। उनके समर्थक दुनिया के विभिन्न देशों में मौजूद हैं। तुर्की में उनके रसूख का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि उनके समर्थक सरकार के बड़े पदाधिकारियों के फ़ोन टैप करते हुए भी पकड़े गये हैं।

फ़तेह उल्लाह गोलन तुर्की के बहुत ही अमीर व्यक्ति का नाम है जिसकी सालाना आय 31 बिलियन डालर से भी अधिक है। उनकी "ख़िदमत" तहरीक (तुर्की नाम हिज़्मत) के अन्तर्गत तुर्की व दूसरे देशों में तीन हज़ार से अधिक स्कूल, एकेडमी, और प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित हैं। बैंकिंग और स्टॉक एक्सचेंज में भी उनकी ज़बरदस्त पूंजी है। इसके अतिरिक्त तुर्की में इस समय आठ टीवी स्टेशन पर गोलन का मालिकाना हक़ है।

फ़तेह उल्लाह गोलन तुर्की का सबसे विवादित व्यक्ति है। यद्यपि वह स्वयं को राजनीतिक उद्देश्यों से पवित्र बताता है और अपने आन्दोलन को एक धार्मिक आन्दोलन बताता है लेकिन वास्तव में वह उर्दगान की उन पॉलिसियों की अत्यधिक निंदा करता है जो अमरीका व इस्राईल के लाभ के विपरीत होती हैं।

अमरीका व इस्राईल ने विभिन्न अवसर पर तुर्क शासन की इस्लामिक कार्यवाहियों के विरुद्ध फ़तेह उल्लाह गोलन का प्रयोग किया है। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि फ़तेह उल्लाह गोलन ने तुर्क शासन की सीरिया में मध्यस्थता का खुलकर कर विरोध किया, उसके अतिरिक्त ग़ाज़ा के पीड़ित फ़िलिस्तीनियों की मदद के लिये तुर्की ने अपना इमदादी (सहायता हेतु) समुद्री जहाज़ फ्लोटिया को वहां रवाना किया तो गोलन ने एक बार फिर उर्दगान की इस पॉलिसी की कड़ी निन्दा की और बयान दिया कि तुर्की को इस्राईल की इजाज़त के बिना ऐसा क़दम नहीं उठाना चाहिये था। इसके अलावा बंग्लादेश में जब जमाअत–ए–इस्लामी के नुमाइन्दों को फ़ांसी की सज़ा सुनायी गयी तो उर्दगान ने इसका विरोध किया जबकि गोलन ने इसका खुलकर समर्थन किया था।

उर्दगान शासन ने विद्रोह का सफलतापूर्वक दमन कर दिया और आग्नोज़तुर्क और उसके 26 दूसरे साथियों पर विद्रोह का आरोप लगाते हुए कार्यवाही आरम्भ कर दी है और दूसरी तरफ़ अमरीका से फ़तेह उल्लाह गोलन को हवाले करने की मांग भी शुरू कर दी है जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय विषय बन गया है।

2004 ई0 में तुर्की ने सज़ा–ए–मौत के क़ानून को ख़त्म कर दिया था लेकिन इस विद्रोह के बाद तुर्की राष्ट्रपति ने अपने भाषण में कहा कि यदि जनता मांग करती है तो हम दोबारा सज़ा–ए–मौत के क़ानून को बहाल करने के लिये तैयार हैं। उनके भाषण पर यूरोपीय यूनियन के शासकों ने तुर्की को ख़बरदार करते हुए कहा कि यदि तुर्की ने सजा–ए–मौत के क़ानून को बहाल किया तो उसके यूरोपीय यूनियन में शामिल होने का रास्ता बन्द हो सकता है।

इस्राईल अपनी अन्तर्राष्ट्रीय चौधराहट की स्थापना या घोषणा से पहले पूरे मध्यपूर्व के हालात को अपने लिये साज़गार करना चाहता है जिसके लिये क्षेत्र की दूसरी क़ौमों का उसके सामने सर झुकाना या तबाह व बर्बाद होना आवश्यक है लेकिन तुर्की के कारण हालात और नागवार होते जा रहे हैं। इसके लिये अमरीका व इस्राईल की पहली कोशिश है कि तुर्की के हुकूमती चेहरे में बदलाव हो या हुकूमत इतनी कमज़ोर हो कि उसकी पॉलिसियों का पूरी तरह से लागू होना संभंव न हो और पूर्व में तुर्की शासन जिस प्रकार अमरीका का पिट्ठू होता था और इस्राईल के फ़ायदे के लिये काम करता था, वर्तमान सरकार भी उसी तरीक़े को अपनाए। लेकिन उर्दगान के तेवर व इस विद्रोह की असफलता ने (देखने में तो यही लगता है कि) इस्राईल को अपनी मंजिल से कोसों दूर कर दिया।

ज़बान की नेकियां

अल्लाह का नाम

ज़बान की ख़ूबियों में एक ख़ूबी ये है कि वो ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का मुबारक नाम ले। जो लज़्ज़त व मज़ा अल्लाह का नाम लेने में है वो किसी में नहीं। ख़ासकर अल्लाह शब्द ऐसा प्यारा और रूह को छू लेने वाला है, जिसकी लज़्ज़त को वही जानता है, जिसकी ज़बान पर ये मुबारक लफ़्ज़ चढ़ा हुआ होता है। हर ग़म को दूर करने वाला, हर तकलीफ़ की राहत, हर दर्द की दवा अल्लाह शब्द में छिपी हुई है। मुसलमान की ज़िन्दगी के हर उतार–चढ़ाव में ये शब्द समाया हुआ है। इसके बग़ैर किसी मुसलमान की ज़िन्दगी गुज़र ही नहीं सकती है। इस वक़्त से लेकर ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक बल्कि मरने के बाद दफ़नाने तक और दफ़नाने के बाद ईसाले सवाब, उसके मग़फ़िरत के कलिमे अदा करने में उसके बग़ैर चारा नहीं।

जब बच्चा पैदा होता है तो सबसे पहले उसक कानों में अज़ान कही जाती है। उसके कान अल्लाह के लफ़्ज़ से कई बार एक मजलिस में परिचित होते हैं। हर अज़ान में ग्यारह बार अल्लाह का नाम आता है।

इसी तरह इन्तिक़ाल के समय कलिमा तैय्यबा पढ़ने को कहा जाता है। पास बैठने वाला इस कलिमे को पढ़ता है और ख़ुदा मरने वाले को तौफ़ीक़ देता है कि वो दुनिया से जाते जाते इस मुबारक कलिमे को अपनी ज़बान से अदा करे। जिसे अदा करने से शैतान को जो मरने वाले का अच्छा ख़ात्मा देखना नहीं चाहता, नामुरादी मिलती है, और मरने वाला ईमान की हालत में जाता है।

मरने के बाद जनाज़े की नमाज़ में सारे नमाज़ी खड़े होकर जनाज़े की नमाज़ पढ़ते हैं और अल्लाह का नाम बेशुमार बार लिया जाता है। इमाम ज़ोर से अल्लाहुअकबर कहता है। मुर्दा जबकि ज़िन्दगी की सारी चीज़ों से महरूम रहता है, लेकिन इन कलिमों का उस पर जो असर होता है, वो ख़ुदा ही को मालूम है।

क़ब्र में रखते हुए भी लोग अल्लाह का नाम लेते हैं। और उसको ख़ाक के सुपुर्द करते हैं। मिट्टी देने के बाद फ़ातिहा या ईसाले सवाब की शक्ल में बग़ैर अल्लाह के लफ़्ज़ के चारा नहीं, ज़्यादा से ज़्यादा लोग अल्लाह का नाम लेते हैं।

ये तो पैदाइश व मौत के वक़्त का हाल है जो दूसरे लोग अल्लाह का नाम लेकर इस आजिज़ व मजबूर पर अल्लाह के मुबारक नाम के ज़रिये रहमत की बारिश करते हैं। लेकिन ख़ुद उसकी ज़बान को नूर व सरवर बख़्शने का ज़रिया दुआ और कलिमे हैं, जिनकी तलक़ीन आप स०अ० ने फ़रमायी है फिर उससे हर वक़्त एक मुसलमान का वास्ता पड़ता है।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE: 08 | *AUGUST 2016* | VOLUME: 08

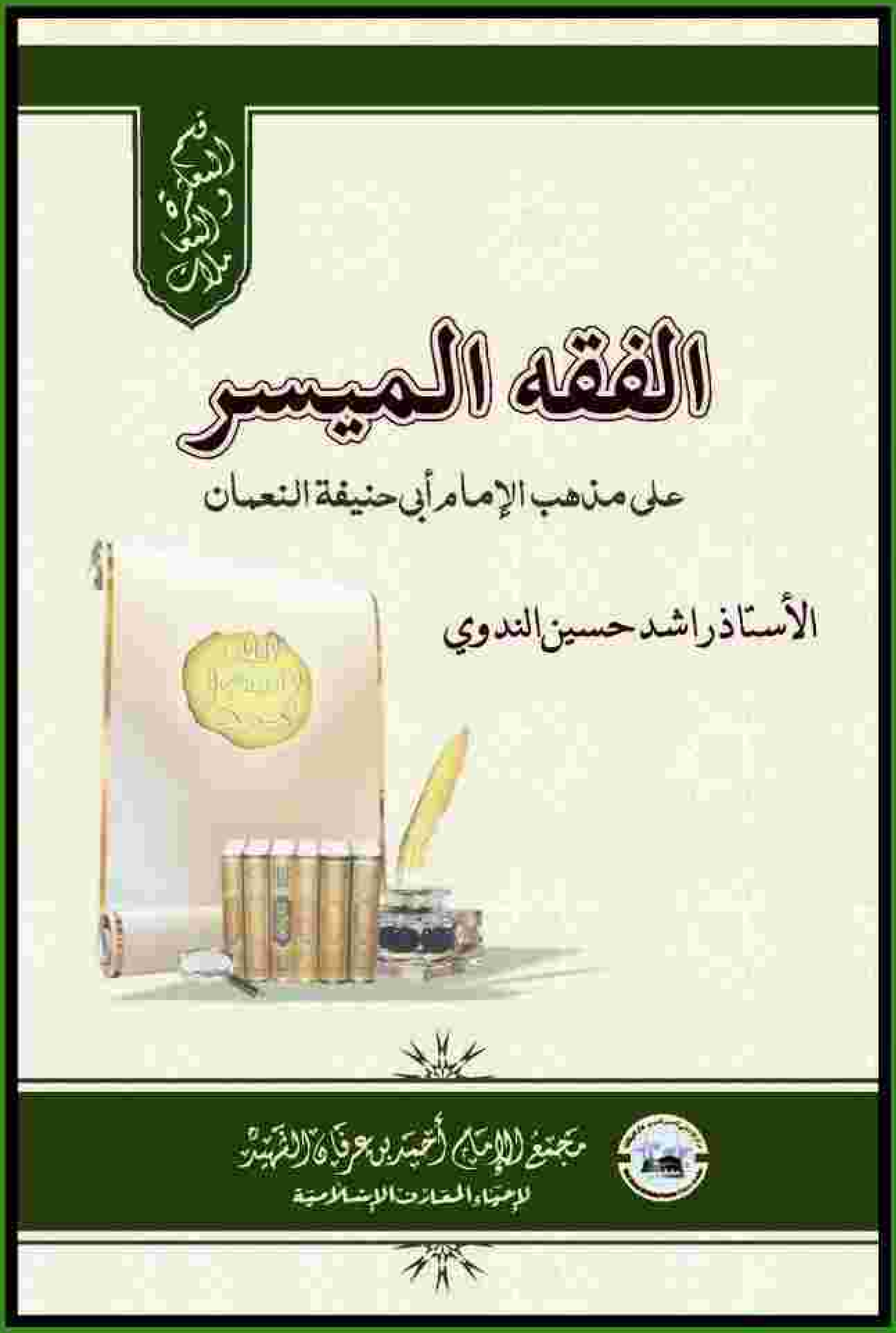

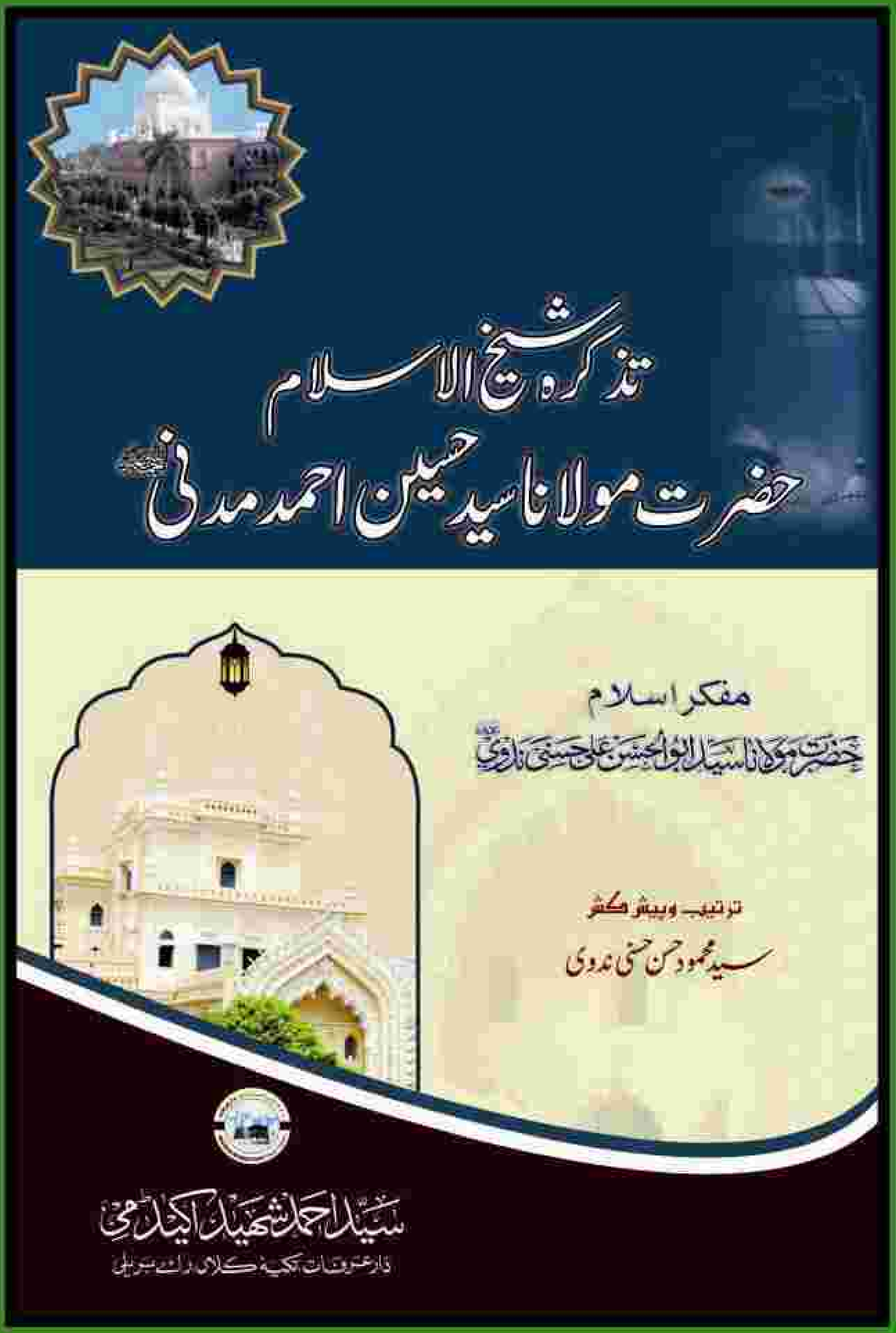

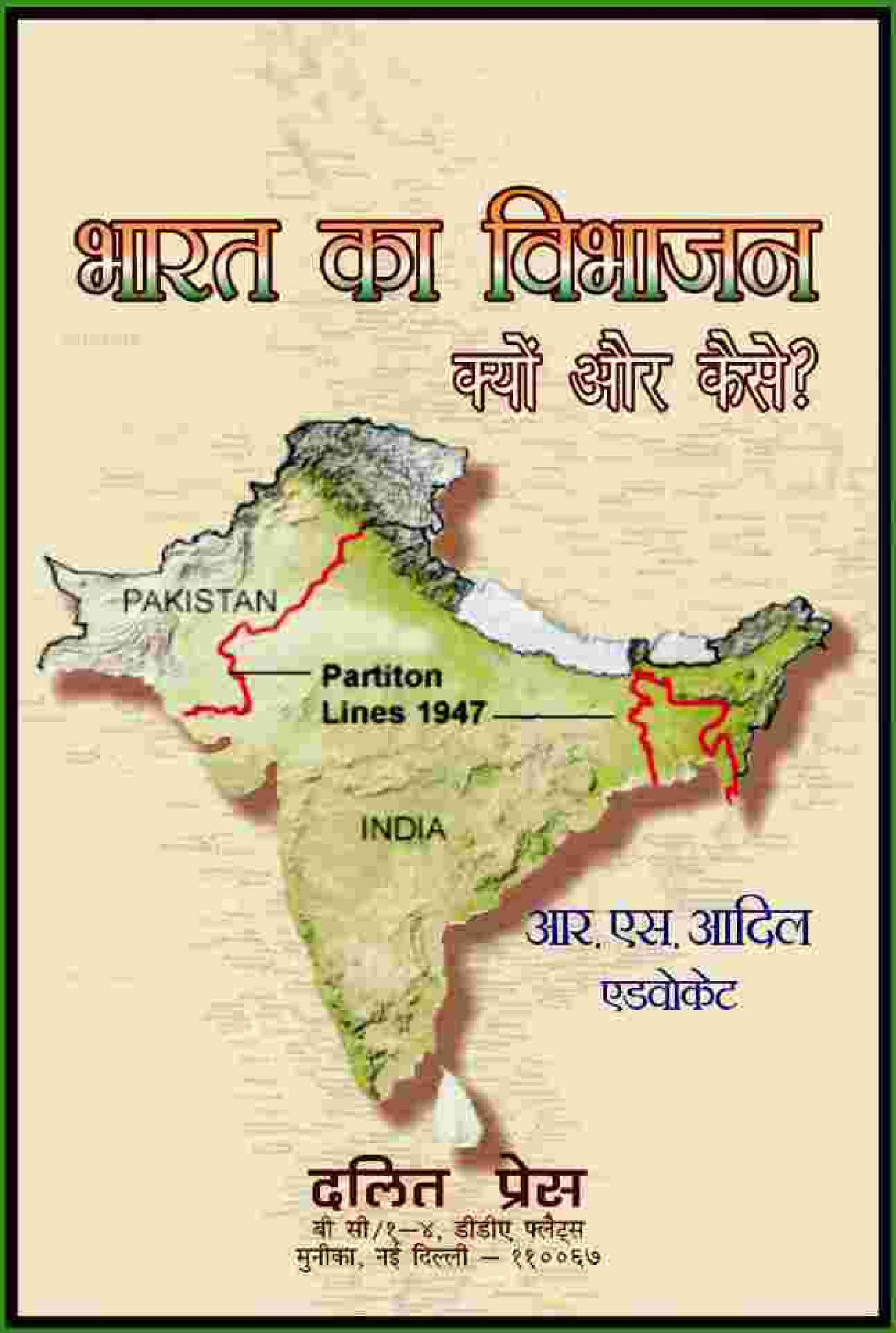

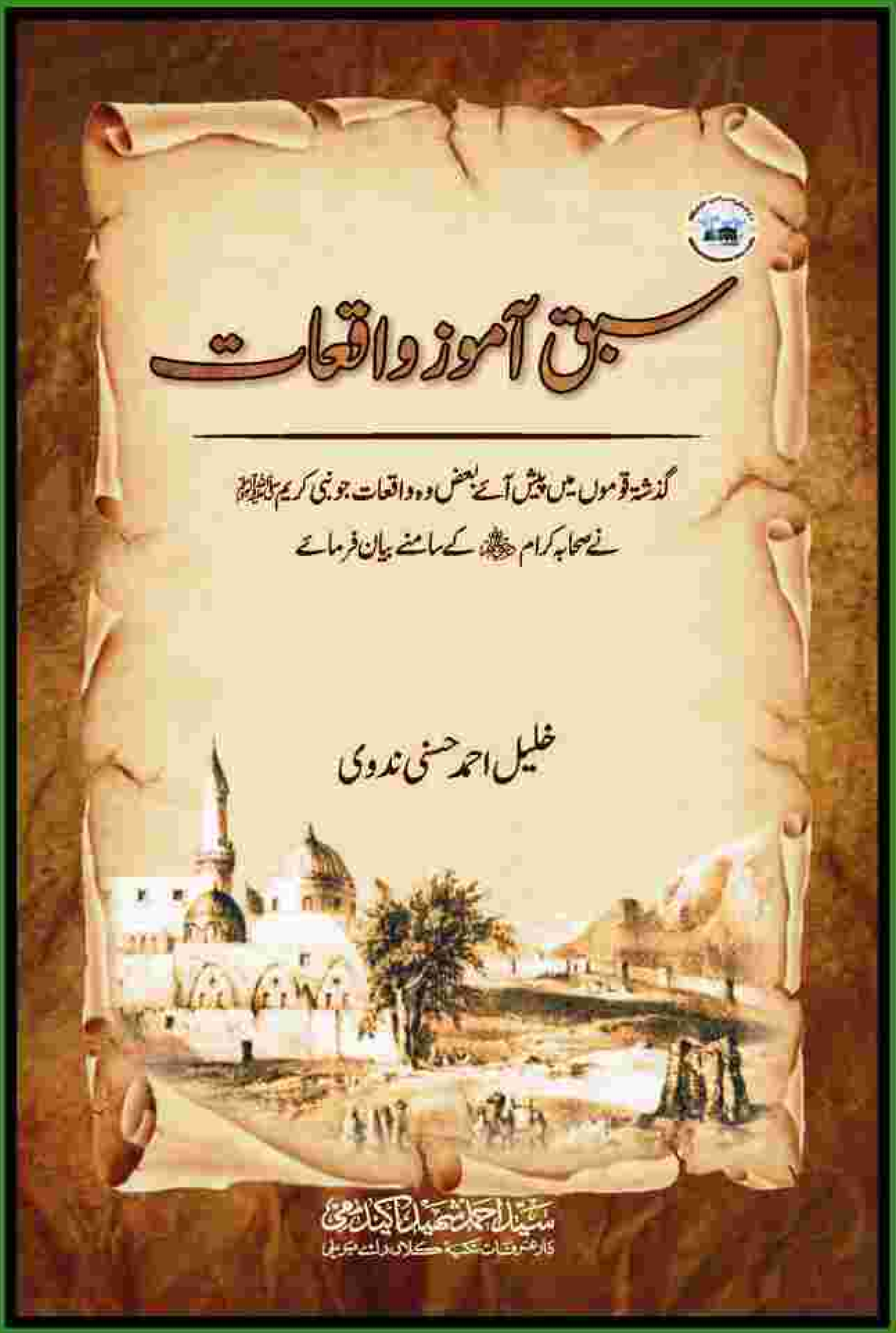

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.